सो बूझे जिस आप बुझाए
भाग - ज तों थ

(निहकलंक हरि शब्द भंडार चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

जन्म दिवस : गुर संगत तेरा जन्म दिहाढ़ा, हरि साचा आप समझाइंदा। एका दिवस सतारा हाढ़ा, शब्दी शब्द उपजाइंदा। (२१ मध्घर २०१६ बि)

गुरूआं अवतारां पैगम्बरां दी जगह घर घर आपणे बच्चयां दी मनाउण डह पैण बरसी, साध सन्त उन्नां दे घर जा जा के पकवान लैण खाईआ। एदू वड्डी होर की होणी गरकी, गुरूआं दी जगह मल मूतर वाले बच्चे घर विच्च आपणे गुरू लैण बणाईआ। एह खेल कलिजुग दी ते कलिजुग दी कला होणी चढ़दी, विद्वानां दे अंदर एह मन मत देणी टिकाईआ। (२४ फग्गण श सं ४)

जगत मत : भगत मत : आपणी मत जो करे विचार, विचार विच्चों प्रगटाईआ। आपणी मत ना जाणे संसार, संसार सागर बेपरवाहीआ। आपणी मत ना कोई आधार, साचा संग ना कोई निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर देवे ब्रह्म मत, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ।

आपणी मत जगत नाता, काया कर्म कांड वरवाइंदा। खेले खेल पुरख बिधाता, मन बुद्ध संग निभाइंदा। वेखणहार खेल तशाशा, जीवण जुगत जगत वडिआइंदा। निरगुण धार जोत प्रकाशा, अबिनाशी आपणी कल वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हर घट आपणी खेल कराइंदा।

जगत मत सदा मतवाली, क्रिया कर्म विच्च फसाईआ। जद वेखो दोवें हत्थां ख़ाली, वस्त सच ना कोई टिकाईआ। मन भरदा रहे दलाली, दलील देवे इक्क चतुराईआ। परम पुरख अवल्लड़ी चाली, तन माटी तत्त रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ।

आपणी मत ना जाणे कोई, भेव नज़र किसे ना आइंदा। गूढ़ी नींदे सारे सोए, बिन सतिगुर अक्ख ना कोई खुल्लाइंदा। जीवत जी ना जन्मे मोए, लक्ख चुरासी गेड़ भवाइंदा। अन्तर

अन्तर मन वासना रोए, धीरज धीर ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया तत्त जगत मत मत भेद आपणे हत्थ रखाइंदा।

जगत मत जगत दुहागण, दोए दोए नैणां दए दुहाईआ। कूड़ी क्रिया बण वैरागण, घर घर फेरा पाईआ। साहिब सतिगुर हरि कन्त ना मिले होए सुहागण, सोभावन्त ना कोई वडयाईआ। बिन किरपा बिन कर्म होई अभागण, निहकर्मी वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर देवे जगत मत, भगत मत आपणे हत्थ रखाईआ।

जगत मत जगत नाता, जगत जीवां नाल रखाइंदा। भगत मत भगवान नाता, परम पुरख आप मिलाइंदा। दोहां विचोला कमलापाता, आपणी धार आप चलाइंदा। अन्तर बैठा साख़याता, शनाख़त विच्च कदे ना आइंदा। हरि का भेव समझया ना जाए विच्च गल्लां बातां, कर्म कांड पर्दा ना कोई उठाइंदा। जिस मिल्या पुरख समरथ दाता, सो सतिगुर जीवण विच्चों जीवण बदलाइंदा। आत्म परमात्म पढ़ाए इक्को गाथा, मंत्र नमो सति समझाइंदा। पूरब जन्म दा पूरा करे घाटा, अगला राह आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मत विच्चों मत समझाइंदा।

जगत मत जगत सलोक, सोहला जगत गाईआ। भगत मत लोक परलोक, दो जहानां दए वडयाईआ। सतिगुर पूरा कर्म कांड लेखा देवे रोक, रोकड़ आपणे हत्थ रखाईआ। जिस बणाया काया किला कोट, मन मत बुद्ध अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंज तत्त त्रैगुण माया रजो तमो सतो गंढ पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा जगत मत, मित्र प्यारा बेपरवाहीआ।

जगत मत ना कुछ बणाए, जगत चले चतुराईआ। गुरमत गुरसिख समझाए, गुर सतिगुर मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाए, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। जीव ईश कंठ लगाए, जगदीश दया कमाईआ। कर्म कांड किछ रहण ना पाए, जिस प्रभ आपणे रंग रंगाईआ। धरू प्रहिलाद जिउँ तराए, त्रैगुण माया डेरा ढाहीआ। कर किरपा जिस बूझ बुझाए, तिस नेत्र नैण खुल्हाईआ। एका दूजा भेव चुकाए, दूई पर्दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मत भेद आपणा आप रखाईआ।

इक मत विच्च जग, जगत करे वडयाईआ। इक्क मत उप्पर शाह रग, बिन गुरमुखां हत्थ किसे ना आईआ। इक्क मत बणाए कग, काग रूप वटाईआ। इक्क मत सृष्ट सबाई नालों करे अलग्ग, पुरख अकाल नाल मिलाईआ। इक्क मत कूड़ी क्रिया घर विच्च लए सद्द, माया ममता मोह वधाईआ। इक्क मत आत्म परमात्म शब्द अनाद वजाए नद, अनहद नादी राग सुणाईआ। इक्क मत जगत सुणाए गाथ, रसना जिह्वा बत्ती दन्द पढ़ाईआ। इक्क मत मेल मिलाए पुरख समराथ, घर घर विच्च रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोवां देवे आपणा साथ, जिउँ भावे तिउँ चले आप रज़ाईआ। (२३ वसाख २०२० बि)

जगत जोबन : जीव जगत जिंोबन जवानी, लोकमात हंढाईआ। वरन बरन राओ रंक दिसे फानी, अन्त कोई रहण ना पाईआ। थिर ना रहे राजा राणी, रईअत रंग ना कोई वखाईआ। जुग जुग चलदी रहे कहाणी, चार कुण्ट वडयाईआ। गुरमुख विरले मिले नाम निशानी,

हरि सतिगुर आप दुआईआ। शब्द जणाए साची बाणी, एका अक्खर कर पढ़ाईआ। भेव ना पाए कोई विद्वानी, विद्या विद्दत सार ना राईआ। भगत वछल गुण निधानी, गुणवन्ता बेपरवाहीआ। हरिजन बख्शे चरन ध्यानी, कँवल चरन सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ।

जीव जगत जोबन रंग, लोकमात हंढाइंदा। जगत सेजा वेख पलंघ, झूठे बसतर आसण लाइंदा। तम्बुर सतार वजाए मरदंग, प्रीत गीत लगाइंदा। भैणां भईआ गाए छन्द, साक सज्जण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। जगत जोबन जीव जंत, लोकमात हंढाईआ। नाता जुड़या नारी कन्त, कन्त नार खुशी मनाईआ। जगत वासना बणाउँदे रहे बणत, छप्पर छन्न छुहाईआ। आपणा वेला ना कोई जाणाए अन्त, अन्त कौण होए सहाईआ। मिल मिल सखीआं गाउँदे रहे छन्द, जीवण ढोला कोई ना गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप रखवाईआ। जगत जोबन मसत अलमसत, लक्ख चुरासी खेल खलाइंदा। रूप रंग कीट हसत, जून अजूनी आप वखाइंदा। भूशन तन पहनाए सुहाए बस्त, जगत शिंगार कराइंदा। खाणा पीणा पहनण देवे रसत, जगत धरवास धराइंदा। साजण मीत मिलाए दस्त, एका दूजा बंधन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत खेल आप खलाइंदा।

जगत जोबन जोरू ज़र, चार कुण्ट वडयाईआ। घर घर खुशीआं रहे कर, जगत वासना संग मिलाईआ। एका भुलया अबिनाशी हरि, जिस जन बणत बणाईआ। निरभौ चुकया भय डर, भयानक आपणा मुख छुपाईआ। जीव जगत आपणी करनी रहे कर, साची किरत ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत बंधन एका पाईआ।

जगत बंधन जगत कुटंब, कूड कुड़िआरा खेल खिलाया। नाता बिधाता पाए बन्द, बन्दी बन्द ना कोई तुड़ाया। हस्स हस्स मेला बत्ती दन्द, नेत्र नैणां दर्शन पाया। कोई ना गाए सुहागी छन्द, हिरदे हरि ना कोई वसाया। कोई उपजे जेरज अंड, उत्भुज सेतज कोई धराया। पारब्रह्म प्रभ वंडी वंड, लक्ख चुरासी खेल खलाया। मानस जन्म हो बख़शिंद, आपणा भेव चुकाया। धर धर नूर निरगुण चन्द, साचा चन्द चमकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वखाया।

जगत जोबन चन्द चकोर, एका रंग समाईआ। झूठा नाता बध्धी डोर, माया ममता संग रखवाईआ। करे वास अन्ध घोर, प्रकाश ना कोई धराईआ। अंदर रक्खे पंज चोर, दिवस रैण लुट्ट लुट्ट रहे खाईआ। कोई ना सके मात होड़, आपणा बल ना कोई वखाईआ । जगत वासना रक्खी लोड़, जगत जुगत करन कुड़माईआ। बिन सवांग वजाइण ढोल, चार कुण्ट शनवाईआ। आपणा मन्दर ना सके कोई फोल, पर्दा सके ना कोई उठाईआ। कौण वस्त जन मिली अनतोल, तेरे हट्ट रखवाईआ। कौण कंडे तोले तोल, धड़ी सेर ना वट्टा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीवण जगत दए वडयाईआ।

जीवण जगत जोबन मलाह, लोकमात बेड़ा रिहा चलाईआ। रूप रंग दए सालाह, काम कामना खेल खलाईआ। मापयां खुशी खुशी रखया एका नां, नां लै लै रहे जस गाईआ। कोई नरायण कोई राम कहे मां, कोई कृष्न अवाज़ लगाईआ। कोई नानक सद्दा देवे थां थां,

कोई गोबिन्द रिहा सुणाईआ। बिन गोबिन्द खाली दिसण सारे थां, झूठी ख़ाक नज़री आईआ। पंज तत्त दिसे निशां, हड्ड मास नाड़ी रत्त जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत तन वेख वखाईआ।

जगत जीव जोबन आस, जुग जुग इक्क रखाइंदा। आपणा नूर कर प्रकाश, चारों कुण्ट चमकाइंदा। शाह पातशाह बण बण ग़रीब निमाणयां करे दासी दास, दास रूप ना आप वटाइंदा। ग़रीब निमाणयां बण बण बणया रहे निरास, आसा पूर ना कोई कराइंदा । लेखा गिण गिण थक्के पवण स्वास, लेखा लेख ना कोई रखाइंदा। नेत्र उठ उठ तक्के पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल वेख वखाइंदा। सूरज चन्न वेख प्रकाश, आपणा जगत काज रचाइंदा। रैण अन्धेरी अमावस मास, सोया वक्त गवाइंदा। अठ्ठे पहर रहे परभास, जूह उजाड़ जंगल फेरा पाइंदा। डूंघी कंदर सोच होका करे एका काश, हाए हाए सर्ब कुरलाइंदा। नाता जुड़या मास मास, मास मास खेल खलाइंदा। पिता पुत्त कहे शाबाश, ज़ोरू ज़र जो घर लिआइंदा। लुट्टे धन जो हाथो हाथ, तिस जगत वडिआइंदा। कोई ना जाणे पैंडा घाट, घाटा नज़र किसे ना आइंदा। कोई ना जाणे विकणा अन्तम हाट, साचा शाह लेखा ना कदे मुकाइंदा। होए ग़ाफ़ल सुत्ता खाट, जगत विछौणा आप वछाइंदा। मूर्ख मुगध भुल्ला लक्ख चुरासी फिरना आण बाट, मुड़ मुड़ गेड़ा गरभवास वखाया। फसया रिहा ज़ात पात, आपणी ज़ात सफात ना कोई कराइंदा। वेंहदा रिहा आफ्ताब, मशरक मग़रब रूप वटाइंदा। ना कोई जाणे पुंन सवाब, सुहबत जगत सर्ब सालाहिंदा। एका वेखे माई बाप, जन्म जन्म जो मात दवाइंदा। कोई ना जाणे आपणा घाट, पार किनारा ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत जोबन जगत वास जुग जुग आप धराइंदा। जगत जोबन चढ़या चाअ, निव निव खुशी मनाईआ। आपणीआं भुजां लए उठा, आपणा बल आप वखाईआ। नज़र ना आए बेपरवाह, जिस जन बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत जुग गेड़ा आप चलाईआ।

जगत जुग गेड़ा गेड़, लक्ख चुरासी कोलू चक्की चक्क भवाईआ। लेखा जाणे नगर खेड़, जुगा जुगन्तर बेपरवाहीआ। आप उपाए आपे दए नबेड़, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। एका वार जड़ दए उखेड़, बूटा कोई नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उलटा बिरछ दए समझाईआ।

उलटा बिरछ मानस ज़ात, पुरख अबिनाशी आप समझाइंदा। दस दस मास रक्खया वास, गरभ जूनी आप भवाइंदा। अठ्ठे पहर देवे धरवास, आप आपणी दया कमाइंदा। घट अंदर वखाए पृथ्मी आकाश, नूर नुराना नूर जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा कर्म आप कमाइंदा।

आपणा कर्म कमावणहारा, जड़ चोटी ना कोई जणाइंदा। फल लगाए अद्धविचकारा, मात गरभ आप टिकाइंदा। लेखा जाणे अंदर बाहरा, गुप्त ज़ाहरा वेख वखाइंदा। पंज तत्त काया कर उजिआरा, तन माटी खेल खलाइंदा। जोबन जवानी विच्च संसारा, बाल जवाना रूप वटाइंदा। तत्तव तत्त भर भंडारा, आसा तृष्ना संग रखाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, तन बसतर आप सजाइंदा। लक्ख चुरासी कर प्यारा, जगत वासना मेल मिलाइंदा । मरे मर जम्मे वारो वारा, जन्म मरन वेख वखाइंदा। ईश जीव जीव ईश ना देवे कोई

सहारा, जगदीश मुख छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप वखाइंदा।

लक्ख चुरासी चले धार, जुग जुग गेड़ा आप दवाईआ। आप उपाए आपे लए शंघार, मारनहारा दिस ना आईआ। रोग सोग चिन्ता दुःख अनिक परकार रक्खे बुखार, दुःख दर्द पीड़ नाल रलाईआ। तन मास हाडी रत्त सुक्के विच्च संसार, अगनी तत्त तत्त जलाईआ। नेत्रहीण करे खिचे जोत आप करतार, जोती जोत ना कोई रुशनाईआ । शाह सुल्ताना कर खुआर, अन्तम बसतर मिरग दए वखाईआ। चारों कुण्ट रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोई धराईआ। पुरान पावे ना कोई सार, वेद पुराना सुत्ता सेज हंढाईआ। वेले अन्तम कढुण बाहर, यार ना संग निभाईआ। साक सज्जण भैण भाई धीआं पुत्तर धक्का देवण मार, अद्धविचकार मुखड़ा देण भवाईआ। दूजी वार ना आए फेरा पाई , जिन भूत प्रेत रहे कुरलाईआ। अन्तम लेखा कटे विच्च संसार, पंज तत्त काया नज़र आईआ। रूह निमाणी करे गिरयाज़ार, वेले अन्त ना कोई छुडाईआ। इक्क घर छड्डया दूजे घर दित्ता वाड़, बंधन बैठा एका पाईआ। कदे पुरख कदे नार, कदे वेसवा रूप वटाईआ। कदे हीजड़ा बणे विच्च संसार, लानत दो जहान वखाईआ। कदे पंछी पंखी बण बण मारे उडार, कदे जल धारा डेरा लाईआ। कदे दुष्टां अंदर कर पसार, आपणी जून रिहा वखाईआ। पुरख अबिनाशी खेल नयार, भेव कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी अचरज रीत चलाईआ। अचरज रीत हरि निरँकार, जुग जुग आप चलाइंदा। भगत भगवन्त लए उभार, साचे सन्त मेल मिलाइंदा। गुरमुखां खोल्हे बन्द किवाड़, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। गुरसिखां बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चवाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर लै अवतार, आप आपणा मार्ग लाइंदा। क्रिया कर्म दस्स संसार, राम नाम इक्क सिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे धंदे आप लगाइंदा ।

साचा धन्दा जुग जुग कार, जन भगतां आप जणाईआ। अठ्ठे पहर इक्क ध्यान, एका गुर समझाईआ। एका देवे धुर फ़रमाण, शब्द शब्दी आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त भगत भगवन्त आपणी सेवा लाईआ।

जुग जुग आपणी सेवा ला, आपणा नाम जपाइंदा। वेले अन्त होए सहा, लोकमात आप तराइंदा। साचे बेड़े लए चढ़ा, एका बेड़ा नाम रखवाइंदा। खेवट खेटा बण मलाह, दो जहानां आप वखाइंदा । गुरमुख विरले लए तरा, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों बाहर कढा, आप आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी धार बंधाइंदा।

कलिजुग अन्तम बंन्हे धार, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। गुरमुखां करे सच प्यार, हरिजन साचे लए मिलाईआ। आपे लभ्भे आपणी वार, दूर दुराडा फेरा पाईआ। देवे दरस दर दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। एका नाम कराए जैकार, सोहँ शब्द आप सुणाईआ । आत्म परमात्म मेला मेले आप करतार, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। जगत जोबन कर खवार, आपणा जोबन लए हंढाईआ। बिरध बाल जवाना जाए तार, जगत बड़ेपा पन्ध मुकाईआ। अन्तम देवे दरस आप निरँकार, घर घर हरिजन फेरा पाईआ। करया तरस सिरजणहार, दीनण दीन होए सहाईआ। गुरमुख साचे लए संभाल, वेले अन्त गोद बहाईआ। होण देवे ना

विंगा वाल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। आपणा फल वेखे आपणे डालू, अमृत फल आप लगाईआ। नाता तोड़ काल महांकाल, धर्मसाल इक्क वखाईआ । साचे मन्दर दीन दयाल, सच सिँघासण सोभा पाईआ। हरिजन मेले आपणे लाल, लाल अनमुलड़े आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाईआ।
आपणे लाल आप उठाए, नित नित सेव कमाइंदा। दरस दीदारी दरस वखाए, दरस दरस आप कराइंदा। संसारी हिरस सर्ब मिटाए, अर्श फर्श पन्ध मुकाइंदा। अमृत मेघ बरस अगनी तत्त बुझाए, सांतक सति सति वरताइंदा। ब्रह्म मत इक्क वखाए, साचा मार्ग आप जणाइंदा। गुरसिख गुर गुर कमलापति एका रंग समाए, जोती जोत जोत मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे धाम बहाइंदा।
हरिजन देवे साचा धाम, बैकुण्ठ निवासी दया कमाइंदा। मेल मिलावा जिउँ सीता राम, सुरती सीता राम मिलाइंदा। जोड़ जुड़ाए कृष्ना काहन, घनईआ आपणे रंग रंगाइंदा। एका मन्दर इक्क मकान, पूजा पाठ इक्क कराइंदा। आवण जावण मेटे जीव जहान, जीव ईश विच्च समाइंदा। अमृत बख्शे पीण खाण, अन्तर जाम प्याइंदा। हरिजन मिले श्री भगवान, भगवान आपणा मेल मिलाइंदा। जगत कटुंब ना रोवे देवे कोई मकाण, पुरख अबिनाशी आपणा खेल खलाइंदा। जिस उपजाया तिस करया परवान, पिता पूत आपणे गले लगाइंदा। जूठे झूठे साक सज्जण सैण लोकमात रह जाण, सगला संग ना कोई निभाइंदा। बिन सतिगुर पूरे कोई ना चढ़ाए सच बबान, धुर धाम ना कोई पुचाइंदा। गुरसिख वेले अन्त खुशी सर्ब मनाण, घर कन्त सुहागी आइंदा। होए धन्न भाग छुटया जहान, घर साचा नज़री आइंदा। ना कोई सूरज चन्द तेज करे रव सस भान, जोती नूर डगमगाइंदा। तृष्ना मुक्की पीण खाण, अमृत फल इक्क खवाइंदा। अठ्ठे पहर एका गाण, एका नाद धुन वजाइंदा। चारों कुण्ट नज़र आए श्री भगवान, जोती जोत डगमगाइंदा। गुरसिख गुर गुर मिल्या आण, गुर सतिगुर मेल मिलाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीवण जुगत भुगत भगत भगवन्त आपणे हत्थ रखाइंदा। (१३ जेठ २०१८ बि)

जप : किरतम नाम जपे जो मेरा। मातलोक विच्च ना होए फेरा। (१५ भादरों २००६ बि)
गुण निधान प्रभ गुणवन्त। गुर दर पाओ हो जाओ उत्तम सन्त। नैण दरसाओ फेर मिले प्रभ साचा कन्त। भरम चुकाओ रसना जापो सोहँ शब्द साचा मत। हरि हरि हरि प्रभ पाउ, विच्च देह प्रभ बैठा इकन्त। जप जप जप प्रभ जीव, जिस बणाई तेरी बणत। करनहारा सभ किछ करता, सर्ब कला प्रभ आप वरतंत। महाराज शेर सिँघ घर खुल्ला भंडारा। मंगो दान सोहँ सर्ब जीव जंत। (२७ चेत २००८ बि)
जप जप नाम जीव, मिले आत्म रस। जोत सरूपी आवे प्रभ वस । आपणा भेव खुल्लावे दस्स। बेमुख दर ते जावे नस्स। सोहँ शब्द बाण चलावे कल, महाराज शेर सिँघ भगतन कीता वस। (२ वसाख २००८ बि)
सोहँ नाम मिल्या नौं निध। नज़री आवे साचा प्रभ, आत्म होवे सिध। रसना जप जप रस पीव, सोहँ बाण आत्म जाए विध। मदि मास आहार तजाउ, महाराज शेर सिँघ मिलण की साची बिध।

मदि मास जिस जीव आहार। सो जीव जाए नरक मझार। कूकर शूकर जून मिले होए खुआर। जन्म घोगढ़ पाए बार बार। होए विष्टा मुख देवे देह अधार। होए नरक निवास पाए दुःख, कोई ना लेवे कलिजुग सार। गुरसिखां उजल मुख, विच्च चरन प्रीती दे अधार। कर चरन प्रीती मिले सभ सुख, कलिजुग बेड़ा होया पार। महाराज शेर सिँघ सर्ब दुःख भंजन, सोहँ देवे शब्द वपार । (१५ वसाख २००८ बि)

साचा प्रभ दया कमाए। जोत सरूपी शब्द लिखवाए। छल छिदर प्रभ नष्ट कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुख दलिद्र सारे लाहे। टूणे जादू प्रभ जगत मुकाए। सोहँ शब्द साचा मुख रखाए। रसना जपे जीव, जिंन भूत कोई नेड़ ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा शब्द चलाए। साचा शब्द प्रभ आप लिखवाया। बिरधां बालां भए सहाया। रसना जप जप जप जीव, आत्म दुख लाहिआ। साचा नाम आत्म पीव, आत्म तृप्ताया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुख दलिद्र सारा लाहिआ। (१ माघ २००८ बि)

सोहँ नाम प्रभ दवाए। सच वस्त प्रभ झोली पाए। रसना जप जप जप जीव आत्म रस उपजाए। साचा नाम आत्म रस पीव, आत्म तृखा मिटाए। आत्म बुझी जगाए दीव, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखाए। (२१ माघ २००८ बि)

कलम शाही ना पाए सार, लिख लिख पन्ध ना कोई मुकाईआ। गुर अवतार कर कर गए पुकार, प्रभ वड्डा वड वडयाईआ। नाम जप जप कट कट गए वगार, बण सेवक सेव कमाईआ। अन्तम ओट रक्ख के गए प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, जिस दा पिता ना कोई माईआ। भैण भाई ना कोई प्यार, साक सज्जण सैण ना कोई अखवाईआ। बिन हरि भगतां देवे ना किसे अधार, लक्ख चुरासी विच्चों लए उठाईआ। घर घर वजाए शब्द नगार, पंचम शब्द रहे जस गाईआ। वाहवा सखीआं मंगलाचार, गीत गोबिन्द अलाईआ। पाया पुरख एकँकार, ना मरे ना जाईआ। सुरत सवाणी होई बेदार, गुर शब्दी लिआ जगाईआ। हाणी हाण मिल्या एका वार, घर वज्जदी रहे वधाईआ। कलिजुग जीव होण खवार, बिन हरि सार कोई ना पाईआ। पढ़ पढ़ वेद कतेब शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान बाणी खाणी गीता ज्ञान गए हार, हरि का रूप नज़र ना आईआ। अठसठ तीर्थ ठर ठर थक्का नर नार, अगनी तत्त ना कोई बुझाईआ। डूंघी कंदर वड़ वड़ जोग अभिआस, कर कर रहे पुकार, नेत्र मूंद ना होया दीदार, कँवल नैण ना नज़री आईआ। मणका मणका फेरन वारो वार, रसना जिह्वा करन पुकार, हउमे हंगता माया ममता सके ना कोई मार, बिन सतिगुर पूरे देवे ना कोई शरनाईआ। सतिगुर पूरा सिरजणहार, डुबदे पाथर लए तार, कोट जन्म दे पापी पतित पुनीत करे देवे दरस अपार, दीद दीद नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन जन हरि हरि जू आपणे रंग रंगाईआ। (६ माघ २०१८ बि)

जायदात : सभ तों वड्डी मानव सेवा जायदाद, जगत जहान नज़री आईआ । जिस नूं ज़बत करन वास्ते कोई कानूंन कायदा नहीं आयद, खुरद बुरद ना कोई कराईआ। (५ वसाख श सं १)

जात पात : जात पात ना प्रभ का रंग। ऊँच नीच वसे प्रभ सभ के संग। (११ वसाख २००८ बि)
जप जीव प्रभ लिखावे साची बात। गुरसिख गुर दोनों इका जात । महाराज शेर सिँघ देवे वड्डिआई, साध संगत नात जिउँ भैण भरात। (६ जेठ २००८ बि)
सर्ब जंत जीव एका जात। ऊँच नीच ना कोई पात। (५ जेठ २००६ बि)

जंजाल : दे के दरस गुर करत निहाल। प्रभ अबिनाशी सदा प्रितपाल। संसार वाले प्रभ तोड़े जंजाल। नज़री नज़र करे निहाल। (१६ मध्घर २००६ बि)
दुसटां ताईं गुर देवे गाल। आवण जावण दा जां पए जंजाल। विच्च चुरासी पीसे वांग दाल। (२० मध्घर २००६ बि)

जीउ पिण्ड : जीउ पिण्ड तन साज, सेव कमाइंदा। त्रैगुण माया रक्खे लाज, साची साजण आपे साज बणत बणाइंदा। मन मत बुध देवे सच्चा दाज, काया काज आप रचाइंदा। निरगुण जोती रक्खे लाज, शब्द मोती तन पहनाइंदा। सरगुण सच्चा शब्द ताज, निरगुण अनहद साची अवाज इक्क सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, सरगुण भेख कर मनमुखां मार खपाइंदा। जीउ पिण्ड तन साज अगन उधारया। अप तेज़ वाए पृथ्मी अकाश, सर्ब पसारया। निरगुण जोती रक्खे वास, सरगुण उधारया। पवण चलाए इक्क स्वास, दमां दम खेल अपारया। निज मन्दर अंदर रक्खे वास, प्रीती नीती अपर अपारया। आपे होया रहे दास, पंचां देवे कल सरदारया। काया सुंञी जगत परभास, एका होया अन्ध अंधिआरया। जन भगतां मानस देही करे रास, गगन अकाश खेल अपारया। सत्तां लोकां रक्खे वास, सत्तां चरना हेठ लताड़िआ । जोती जोत सरूप हरि , आप आपणी किरपा कर, जोत जगाए नाड़ी नाड़िआ। जीउ पिण्ड तन खेत, मन बौरानया। कलिजुग माया लगा हेत, जीव शैतानया। गुरमुखां लिखया लेख हरि महीने चेत, आपे आप कर पछानया। साढ्ठे तिन्न हत्थ रक्खे नींह, सोहँ नाम सच पैमानया। कलिजुग चढ़ी दुपहर जेठ, साया हेठ ना कोई रखानया। माया भुल्ले राजे राणे वड वड सेठ, नर हरि ना किसे पछानया। अन्तम भन्ने कौड़े रेठ, बेमुख भुंने जिउँ भठिआले दाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, जीउ पिण्ड जिस पछानया।
जीउ पिण्ड जल धार, कँवल प्रकाशया। मानस देही पैज सवार, रसना जपया हरि स्वासया। लक्ख चुरासी आर पार, गेड़ा मुक्के गरभ वासया। नौं दर दरवाजे रक्खे बाहर, हरिजन मिल्या शाहो शाबासया। दसवें खोल्हे बन्द किवाड़, साचा मण्डल साची रासया। सतारां हाढ़ी दिवस अपार, पुरख अबिनाशी गुर संगत तेरा होए दासन दासया। नाता तुटे जूठे झूठे मीत मुरार यार, एका एक नाता होए सहाई पृथ्मी अकासया। एका पुरख एका नार,

सृष्ट सबाई होए खवार, ना कोई जाणे पुरख बिधातया। हरिजन जन हरि अन्तम कल उतरे पार, पारब्रह्म जिस मात पछानया। जीउ पिण्ड तन साज, मन्दर उसारया। कलिजुग रक्खण आया लाज, जोती जामा भेख अपारया। प्रगट होए देस माझ, चार वरनां रक्खे सांझ, जाती पाती कमलापाती आप गवा रिहा। दर दर मंगे हरि भिखार, चरन प्रीती वस्त अपार, सतिजुग साचे तेरी धार, करे खेल अलक्खना लाखिआ। सतारां हाढ़ी शब्द उडार, लोआं पुरीआं होए बाहर, जन भगतां करे कराए बन्द खुलासया। नौं दवारे सच दरबार, शब्द सिँघासण कर त्यार, आसण लाए जोत प्रकाशया। काया मन्दर महल्ल अपार, चौदां लोक रिहा उसार, जीव जंत ना पाए सार, ना कोई जाणे आस पासया। अतल वितल शतल सरकार, साचा देस बल दवार, बावन जामा पुरख अबिनाशया। तलातल महातल बंन्हे धार, रसातल गुण आप विचार, लोक पताल रक्खे वासया। बाशक सेजा हरि निरँकार, सहँसर मुख छतर झुलार, दोए सहँसर जिह्वा विचार, जोती जोत सरूप हरि, साची जोत करे प्रकाशया। (१६ हाढ़ २०१२) बि (जान ते शरीर)

जीव जी : जीव जी का जाणे भेव, जुग जुग वेख वखाइंदा। जीव जी का जाणे नेम, नित नित वेख वखाइंदा। जीव जी का जाणे प्रेम, घर घर खोज खोजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा वक्खो वक्ख रखाइंदा।
जीव जी का लेखा वक्खरा, मात पित भाई भैण वंड ना कोई वंडाइंदा। जीव जी का लेखा जाणे विच्च पत्थरां, टिल्ले पर्बत वेख वखाइंदा। जीव जी का प्रेम प्यार साचा सत्थरा, सत्थर यारड़ा सेज सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहणा सभ दी झोली पाइंदा।
जीव जी का सदा सद हित, हितकारी वेख वखाइंदा। जीव जी का लहणा नित नवित्त, जुग जुग झोली पाइंदा। जीव जी का बणे मात पित, गोद सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। जीव जी का लेखा मुक्के बूंद रित, तत्त चोला लेखे पाइंदा। जीव जी का लेखा लिख, बिन लेखिउँ पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा।
जीव जी पहने चोगा, चोला तन हंढाईआ। जीव जी का इक्को मौका, माणस जन्म वडयाईआ। जीव जी का इक्को नाम सौखा, सोहँ करे पढ़ाईआ। जीव जी का चुक्के धोखा, दूई रहण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वडयाईआ।
जीव जी का जानणहार, हरि सतिगुर आप अखवाइंदा। जीव जी का वणज वपार, हरि सतिगुर नाम हट्ट विकाइंदा। जीव जी का ठांडा दरबार, सतिगुर सरनाई इक्क दरसाइंदा। जीव जी का मेला कन्त भतार, नर नरायण सुरत शब्द परनाइंदा। जीव जी का इक्क दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बोले जैकार, तिस जम नेड़ ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन्म जन्म कर्म कर्म वरन वरन बरन बरन उप्पर धरनी धरन, धवल लेखा सर्ब मुकाइंदा। (२५ चेत २०२० बि)

जीवत मरन : वक्त कहे गुरमुखो सोहणा वेला सरन दा, थित वार घड़ी पल मिले वडयाईआ। वेला आ गिआ जींवदिआं ही मरन दा, जीवण सतिगुर झोली पाईआ। टाइम आ गिआ मंज़ल चढ़न दा, चढ़ना चाईं चाईंआ। समां सुहा रिहा करनी करन दा, करता पुरख करनी रिहा कमाईआ। मज़ा रस प्रेम लै लउ ओस दे चरन दा, जो चरनां तों विछड़यां रिहा मिलाईआ। हुण वेला नहीं हँकार विच्च अड़न दा, मन मति बुद्धि चले ना कोई चुतराईआ। समां सोहणा निर्भय कोलों डरन दा, भय झूठा देणा चुकाईआ। सोहणा रंग सच दवारे वड़न दा, कुण्डा लैणा खुल्हाईआ। वेला नहीं कूड़ी क्रिया विच्च हड़न दा, बेड़ा लउ तराईआ। वक्त नहीं इक्क दूजे गुरमुख नूं वेख के जलण दा, प्रेम प्रीती लउ बणाईआ। वक्त आ गिआ बेड़ा बंन्हण दा, तिनके कड्ढे लउ कराईआ। जगत विहार सदा चलदा रहिंदा खाण पीण रिंन्हण दा, आत्म परमात्म जोड़ ना कोई जुड़ाईआ। तीर मारे ना कोई अंदर विंन्हण दा, शब्दी रूप ना कोई वखाईआ। हुण वेला नहीं घड़ीआं पल गिणन दा, गिणती पिछली दिउ भुलाईआ। हुण समां नहीं बच्चे नीहां विच्च चिणन दा, बच्चयां नूं आपणी गोद उठाईआ । हुण कोई पैमाना नहीं लै के आया तोलण मिनण दा, बेपरवाही विच्च पार लंघाईआ। वक्त नहीं दर छड के दूर दुराडिआं हिलण दा, हलत पलत लेखे रिहा चुकाईआ। वेला नहीं हुण जाण दे कलिजुग कूड़ा चिक्कड़ डूंघा जिल्हण दा, बिन सतिगुर पूरे पार ना कोई लंघाईआ। वेला आ गिआ तुहाढ्ढे फुलण दा, फुलवाड़ी आपणी दिआं महकाईआ। झगढ़ा छड दिउ कुड़यां वैलण दा, विरलाप अंदरों इक्को दिआं सिखाईआ। झगढ़ा मुक जाए माया ममता विच्च टहलण दा, टहलूए दरगाह दे दिआं बणाईआ। नज़ारा तक लउ आपणे नैण नैनण दा, नैण नैणां विच्च समाईआ। अक्खीं वेख के कोई लोड़ नहीं रसना बचन कहनण दा, परदे वाली रमज़ ना कोई वखाईआ। सुहावण समां सतिगुर सरन चरन बहनण दा, चरन बह के भाई भैण रूप वटाईआ। हुण रोणा नहीं पा के वैण वैनण दा, वैहन्दी धारों पार लंघाईआ। एह कोई कहाणी नहीं तोता मैनण दा, मन दी मनसा रिहा मिटाईआ। एह कोई लेखा नही ं गीता रामायनण दा, रामां दा राम आपणा हुक्म वरताईआ। वेखो खेल नर नरायनण दा, जो निराकार हो के जोत जगाईआ। तुसीं रूप सचमुच उह आयनण दा, जिस नूं अहनलहक़ हक गिआ जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र नाल गुरमुखो जगत दे मज़ारओ तुहानूं मालक रिहा बणाईआ। (११ चेत श सं १)

आवे जावे मरे वारो वारा, चुरासी गेड़ ना कोई मुकाईआ । कबीर जुलाहा करे पुकारा, सचखण्ड गढ़ उप्पर चढ़ के दए दुहाईआ। जन भगतो वेखो विगसो पावो सारा, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। जद मरो मरो हरि के दवारा, सतिगुर चरन सरन सरनाईआ। फिर मरना होए ना दूजी वारा, जन्म जन्म ना कोई भवाईआ। मर जीवत जीवत मर वेखो खेल धुर दरबारा, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दवार दए वडयाईआ। (१८ मध्धर श सं ६)

जूए जन्म हारना : हरिजन हरि साची धार। मिल्या हरि साचा भतार। दे दरस अन्त जाए तार। गुरमुख साचा सन्त प्रभ साचा करे प्यार। कलिजुग भुल्ले सर्ब जीव जंत, एका दिसे पासा हार। बेमुखां माया पाए बेअन्त, मानस जन्म चले जूए हार। गुरमुख साचे आप उठाए सन्त, एका बख्शे चरन प्यार। होवे मिलावा साचे कन्त, गुरमुख आत्म बूझ बुझार। जोत प्रगटाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। (६ जेठ २०१० बि)

हरि हरि साचा वेख विचारो। जूए जन्म ना आपणा हारो। मानस जन्म ना आए दूजी वारो। झूठा दिसे सभ परिवारो। वेले अन्त होए सहाई एका इक्क करतारो। जोत सरूपी दरस दिखाई हरस मिटाई देवे नाम अधारो। प्रभ अबिनाशी दया कमाई देवे वड्डिआई, आपणी गोद सवरन उठाई पारब्रह्म रूप अपारो। (४ हाढ़ २०१० बि)

गोबिन्द ख़ालसा चार वरन दी धार, धरनी धरत धवल वज्जे वधाईआ। सांझा बोले इक्क जैकार, धुर दा ढोला अगम्म अथाहीआ। इक्को इष्ट मन्ने निरँकार, दूसर ओट ना कोई तकाईआ। इक्को मन्दर वेख दवार, इक्को आसण सिँघासण सोभा पाईआ। इक्को पिऔणा अमृत ठंडा ठार, अगनी अग्ग तत्त बुझाईआ। सो ख़ालसा गोबिन्द गोबिन्द करे त्यार, गोबिन्द गोबिन्द विच्चों प्रगटाईआ। जो जूए जन्म ना जाए हार, माणस मानव मानुख आपणा रंग रंगाईआ। साचा मार्ग दस्से संसार, संसारी भण्डारी सँघारी वेखण चाईं चाईंआ। सो ख़ालसा जिस ख़ालस करे आप करतार, करनी दा करता दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी शाह पातशाह शहनशाह सच्ची सरकार, रस्ता मार्ग पन्थ राह जुग जुग आप जणाईआ। (१५ अस्सू श सं ४)

पुरख अकाल कहे सुण शब्दी शब्द दुलारे, शब्द धार समझाईआ। मेरे गुरमुख धुर दे भगत सचखण्ड दे वणजारे, चुरासी विच्च कदे ना आईआ। मानस जन्म जगत जूए विच्च कदे ना हारे, लेखा चुक्के थाउँ थाईंआ। सति दी आत्मा सति सरूप कोई ना मारे, तन वजूद जगत जगत वडयाईआ। आत्म नूर नूर जोत चमत्कारे, निरगुण धार डगमगाईआ। सचखण्ड सच दवार चढ़े चुबारे, जिथ्थे असथिल गृह इक्को नज़री आईआ। हरिजन गुरमुख जन्म कदे ना हारे, जो हिरदे रिहा समाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी हो के तारे, तारनहार बेपरवाहीआ। गोबिन्द दे सुँत गोबिन्द दे दुलारे, जो रणभूमी अखाड़े विच्च आपणा आप लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बच्चयां वाला रक्खे आपणे नाम सहारे, अजीत अतीत आप कराईआ। (१६ मध्घर श सं ८)

जूठ : आत्म विचार प्रभ की साची। जूठी रसना जगत की काची। (२७ फग्गण २००७ बि)

कलिजुग जीव क्यों सोए पैर पसार। एका छड्डो जूठा झूठा जगत प्यार। मिलाओ मेल

हरि सच भतार । दीपक जोत विच्च मात दे जगो मिटे अन्ध अंधिआर। (१ मध्घर २०१० बि)
सर्ब जीआं दा नाता तुट जाए जूठ झूठ, जो पुरख अकाल ध्याइंदा। (२० मध्घर २००६ बि)

जून : जोत विच्चों मैं जोत जगा के। लक्ख चुरासी जून उपा के। रकत बूंद दी देह बणाई। विच्च आपणी जोत टिकाई। उप्पर अकाश जो मेरा धाम। उस दा धरया बैकुण्ठ नाम। (१२ भादरों २००६ बि)
ऐसा मैं इन्साफ करावां। जून विच्चों सिखां नूं कढावां। मेरी सरन सिख जो परे। गरभ जून में कदे ना अड़े। ऐसा तोड़ां मैं ज़ंजाला। अन्त काल में मैं रखवाला। (१२ भादरों २००६ बि)

जो जन : जो जन आए कर के आस, सतिगुर आसा पूर कराईआ । जो जन रक्खे मिलण दी प्यास, जगत तृसना भुक्ख गवाईआ। जो जन होया रहे निरास, तिस आसा आप बंधाईआ। जो जन लभ्भण आया ख़ास, तिस ख़ाहश पूर वखाईआ। जो जन ध्यावे स्वास स्वास, तिस स्वास स्वास समाईआ। जो जन वेखण चाहे रास, काया मण्डल दए वखाईआ। जो जन वसणा चाहे साथ, तिस आपणे संग रलाईआ। जो जन सुणना चाहे गाथ, तिस ढोला दए जणाईआ। जो जन टेकणा चाहे माथ, तिस मस्तक टिक्का लाईआ । जो जन खोल्हणा चाहे आख, तिस नेत्र दए खुल्हाईआ। जो जन वेखणा चाहे साखयात, हरि सतिगुर नज़री आईआ। जे कोई पुच्छण आए बात, तिस गल्लां बातां विच्च परचाईआ। जो जन पौण आए निज़ात, तिस बेड़ा पार कराईआ। जो जन वेखण आए आफ्ताब, नूरो नूर करे रुशनाईआ। जो जन पीवण आवे हयाते आब, तिस अमृत मेघ बरसाईआ। जो जन मुख पर्दा लाहवण आए नक़ाब, तिस नूरी दरस कराईआ। जो जन सुणन आवे नाद, तिस जन अनहद रागी राग सुणाईआ। जो जन होवण आए विस्माद, तिस विस्मादी आपणे विच्च मिलाईआ। जो जन लभ्भण आए वाहद, लाशरीक गाड गहर गम्भीर भेव सर्ब जणाईआ। जो जन करन आवे लाड, तिस जन आपणी गोद बहाईआ। जो जन बोले वाद विवाद, तिस धक्का देवे लाईआ। जो जन रसना जिह्वा मंगे स्वाद, तिस जगत विकारा रस खवाईआ। जो जन आत्म मंगे दाद, तिस साची वस्त झोली पाईआ। जो जन अन्तर अन्तर करे याद, तिस मंत्र दए समझाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा समझाईआ।

झक्ख : सिर रक्ख प्रभ हत्थ, कलिजुग सोझी पाई सारी। देह चलाया रथ विच्च सोहँ पाई वथ, साचा होवे आप भण्डारी। बेमुख शब्द ना जानण, दर आए जाइण झक्ख मारी। (१५ विसाख २००८ बि)
ज्ञान ब्रह्म कोई जन विचारे। बेमुख आए जाए झक्ख मारे। (६ जेठ २००८ बि)
गुरमुख मेला सहज सुभाया, आप कराए काया मन्दर गुरूदवार । दूजे दर हत्थ ना आया, लक्ख चुरासी रही झक्ख मार। (१८ भादरों २०१८ बि)

कूड़ी क्रिया मारो ना झक्ख, झाका सभ दा आप गवाइंदा। पीआ प्रीतम नाल वेखो वस, वसल आपणा इक्क कराइंदा। दिवस रैण गाओ जस, जस ढोला इक्क सुणाइंदा। किसे कम्म ना औणा तत्त अठ, मन मत बुद्ध तत्त ना कोई रखाइंदा। बीज बीजो आपणे वत, नाम फुलवाड़ी इक्क महकाइंदा। जिस नूं गोबिन्द उत्ते पै गिआ शक़, सो गुरसिख आर पार पन्ध ना कोई मुकाइंदा। सतिगुर पूरा आदि जुगादि जुगाँ जुगन्तर औंदा जांदा कदे ना जाए थक्क, थकावट सभ दी आप गवाइंदा। मन्दर मसजद शिवदुआले मठ्ठ चार दवारी कोई ना रक्खे डक, बस्ता बंन बन्द ना कोई कराइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल अजूनी रहित वसणहारा घट घट, घर घर आपणा डेरा लाइंदा। आत्म मार्ग देवे दस्स, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। मेल मिलावा हस्स हस्स, हँस मुख सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाइंदा। गुरमुख गुर इक्क दूजे दे होवण वस, आपणा आप ना कोई वडिआइंदा। जीव जंत साध सन्त साहिब सतिगुर इक्को जस, जस वेद पुरान सिफ्त सालाहिंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, सृष्ट सबाई करे अकठ्ठ, इक्को देवे ब्रह्म मत, पिछला तत्त सर्ब गवाइंदा। (२५ माघ २०१६ बि)

झक्खड़ : इक्की सावण सभ दा सांझा, सभना आप जणाईआ। हरि के नाम बिना कोई ना रहे वांझा, प्रभ देवणहार सर्ब वड्डिआईआ। कलिजुग अन्तम कूड़ी क्रिया झक्खड़ वगे झांजा, उच्चे पर्बत रिहा ढाहीआ। वीहवीं सदी पिछों फिरना मांजा, सफा सभ दी दए उठाईआ। किसे ना गौणा हीर रांझा, सद हेक ना कोई लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि संगत दिवस समझाईआ। (२५ सावण २०२० बि)

धरनी कहे मैं रोवां नेत्र, नैणां नीर वहाईआ। कलिजुग अन्त वेख झक्खड़, जगत रैण अन्धेरी छाईआ। मत बसन्ती दिसे ना कोई चेत्र, गुरमुख फुलवाड़ी ना कोई महकाईआ। काम वासना सारे खेडण, हँकार करे लड़ाईआ । सुहञ्जणी दिसे ना कोई सेजण, नार कन्त ना कोई वडयाईआ। मस्तक लाए ना कोई मेखन, जोत ललाट ना कोई रुशनाईआ। भरमे भुल्ले मुलां शेख़ण, मसला सच ना कोई समझाईआ। पंडत पांधे धीआं भैणां वेखण, नेत्र नैण ना कोई शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। (१६ फग्गण २०२० बि)

झूठ : अबिनाशी प्रभ सदा हज़ूर। झूठी दुनियां कूड़ो कूड़। (१८ मध्घर २००६ बि)

झूठा जगत झूठी है रीत। सच्चा सतिगुर है सदा अतीत। (१६ मध्घर २००६ बि)

झूठी देह झूठा संसार। झूठी माया झूठा आकार। जूठ झूठ विच्च डुबा संसार । कर्म धर्म दी कोई ना करे वीचार। (२० मध्घर २००६ बि)

छब्बी पोह लई हुक्म लिखवाया। सच शब्द गुर सच सुणाया। जोत सरूपी जोत माह समाया। झूठी देह नूं आप तजाया। जोत सरूप एह डंक वजाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक हो आया। (२५ पोह २००६ बि)

सन्त मनी सिँघ कहे मैं तक्कां चारे कूट, बिन नैणां नैण उठाईआ। दीन दुनियां दिसदी झूठ, सगला संग ना कोई बणाईआ। इक्को पुरख अकाले दीन दयाल तेरी ओट, इक्को तेरे दर ते सीस निवाईआ। मैं तेरा प्रकाश तक्कणा निरगुण जोत, जोती जाते वेख वखाईआ। किरपा कर के बुद्धि तों परे बखशीं सोच, जगत समझ दी लोड़ रहे ना राईआ। प्रेम भंडारा दईं अतोट, अतुट देणा वरताईआ। तेरा खेल होणा लोक परलोक, दो जहान वेखण नैण उठाईआ। जेहड़ा शब्दी धार मैनूं दस्सया सलोक, सोहँ ढोला दित्ता समझाईआ। मैं एसे दी माणा मौज, मजलस तेरे नाल रखवाईआ। तूं मेरा प्रीतम चोज, चोज़ी प्रीतम इक्को नज़री आईआ। मैनूं बाहरों करनी पए ना खोज, खोजत खोजत खोजत हो बैरागण रूप ना कोई धराईआ। बेशक मैनूं ताअने दिन्दे लोक, सृष्टी दुनियां कहे शुदाईआ। इक्क बचन मैं सुणावां ठोक, गुस्सा गिला प्रभू ना लैणा रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी शरनाईआ। (१३ कत्तक श सं ८)

जगत वासना जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया नाल वडयाईआ। (७ फग्गण श सं ८)

कलिजुग कहे धर्म मेरा डंका चारे कूटा, दह दिशा रिहा जणाईआ। धर्म तेरा धर्म दा रहण नहीं दित्ता कोई बूटा, सच फल ना कोई विखाईआ। मैं माया ममता दे के हूटा, हुलारा दित्ता ख़लक खुदाईआ। तन वजूद कर के झूठा, झूठी क्रिया नाल मिलाईआ। काया भाण्डा खाली कर के ठूठा, सति सच विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। आत्म परमात्म नाता तक्क लै रूठा, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोई मिलाईआ। मेरा साहिब दयाला मेरे उत्ते तूठा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। मैं खुशीआं विच्च पाई लूटा, लुट लुट के सभ नूं रिहा खाईआ। धर्म तेरा भाग होया निखुटा, जगत मिले ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। (२० फग्गण श सं ८)
कलिजुग कूड़ कुड़िआरे चारों कुण्ट जूठ झूठ दा बीजिआ बीअ, कूड़ कुड़िआरा फल रिहा लगाईआ। (२४ भादरों श सं ६)

जन भगतो दीन दुनी दा नाता झूठा समझो जग, पुत्त पोतरे कम्म किसे ना आईआ। जो जगत तृष्ना विच्च गए बझ, माया ममता नाल मिलाईआ। (३ अस्सू श सं ६)

ठग्ग : मेरा सिख ना होए ठग्ग चोर यार। (१८ माघ २००६ बि)
हरि सिकदार सच सिकदारी। जन भगतां करे ख़बरदार, होका देवे वारो वारी। कलिजुग जीव ठग्ग चोर यार, ना कोई दिसे नाम वपारी। अन्तम मानस जन्म जाए हार, बहणा धर्म राए दे चल दवारी। गुरमुख साचे सन्त जनां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे दर सच्ची सरदारी। (१३ हाढ़ २०११ बि)

दिल अंदर दिल दी धार, दलेर आख सुणाइंदा। दिल अंदर द्वैती ख़ार, कंडा ठोर वखाइंदा।

दिल अंदर हरि का प्यार, हरि साचा आप जणाइंदा। दिल अंदर ठग्ग चोर यार, मन वासना नाल रलाइंदा। दिल अंदर साचा मीत मुरार, दिस किसे ना आइंदा । दिल अंदर महिमा जाणे आप गुर अवतार, भेव अभेदा भेव खुल्ह़ाइंदा। साचा रस्ता एका वार, मन मनुआ आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिल अंदर दिल वेख वखाइंदा।

दिल अंदर वड़या दिल, जगत दलील गवाईआ। छिन छिन अन्तर जाए हिल, ठहर कदे ना पाईआ। जिस जन तोड़े बज़र कपाटी सिल, सो आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन वासना दए समझाईआ। (८ माघ २०१८ बि)

वेखो हरि जू लुच्चा ठग्ग, ठग्गी सभ दे नाल कराईआ। पंज तत्त ला ला अग्ग, अगनी तत्त जलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात भेज वग, वागी बण बण सच्चे माहीआ। इक्को दस्सया अचार चज, अचरज आपणा वेस ना किसे वडयाईआ। किसे मक्के काअबे करौंदा रिहा हज्ज, कलमा नबी अमाम पढ़ाईआ। किसे नाम सति दित्ता दस्स, किसे वाहिगुरू सिफ्त सालाहीआ। किसे राम राम दित्ता जस, किसे कृष्न कृष्न समझाईआ। आप दूर दुराडा बह के रिहा वस, आपणी लुकवीं खेल्ह़ रचाईआ। जुग जुग चौकड़ी गा गा गए थक्क, अन्तम आप वेखण आईआ। चारों कुण्ट लौंदे भख, अगनी तत्त रही तपाईआ। ख़ाली दिसे चौदां हट्ट, किशन वंड वंड वंडाईआ। चौदां तबक बणे हट्ट, बण सवांगी सवांग वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रभ सरनाई गए ढठ्ठ, आपणा आप गवाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रक्ख, तेरे हत्थ तेरी वडयाईआ । वेख साडे ख़ाली हत्थ, दर तेरे देण दुहाईआ। जिन्ह़ां लक्कड़ां उत्ते दित्ते रक्ख, काया माटी रूप ना कोई वखाईआ। धूआंधार तेरा नूर वेख समरथ, तेरे घर वज्जे वधाईआ। बिन तुध कोई ना रक्खे पत, पतवन्त मेरे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव ना किसे जणाईआ।

हरि जू लुचा ठग्ग चोर, चोरी सभ दे नाल कराइंदा। वसणहार अन्धेरी घोर, डूंघी खड्ड कुंदर वेख वखाइंदा। अग्गे लए सारे तोर, तुरत आपणा हुक्म सुणाइंदा। कोई ना सके अग्गों मोड़, सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। निरगुण सरगुण दोवें जोड़, दोए दोए आपणी कल वरताइंदा। अंदरों बाहरों दिसे होर, भेद अभेद आप छुपाइंदा । तिस अग्गे चले ना कोई ज़ोर, ज़ोर ज़ाबर आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच ज्ञान धुर दी बाणी आपणी करनी आप जणाइंदा। (१६ मध्घर २०१६ बि)

ठाकर : प्रगट जोत प्रभ ठाकर, जिस जगत पसारया। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, जीव जंत उधारया। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, जिस अन्त ना पारावारया। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, जुग जुग देह पलटा लिआ। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, सद सद सद निमसकारया। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, कलिजुग आ भगतां नूं तारया। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, भय भंजन सिख उधारया। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, बैठा विच्च देह प्रभ निराधारया। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, कोट ब्रह्मण्ड जिस पसर पसारया। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, चन्द सूरज जिस सेवा ला लिआ।

प्रगट जोत प्रभ ठाकर, तीन लोक इक्क रंग समा लिआ । प्रगट जोत प्रभ ठाकर, ब्रह्म बिन्द सभ जगत उपा लिआ। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, आपणा आप विच्च टिका लिआ। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, माया रूपी जीव पर्दा पा लिआ। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, राखे हउमे रोग, देह अन्धेर रखा लिआ। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, जोत जगा निराली देह दीपक डगमगा लिआ। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, जीव विकारे विच्च प्रभ छुपा लिआ। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, कर कर्म विचार भगतां नूं दरस दिखा लिआ। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, आप ब्रह्म सरूप सिख ब्रह्म सरूप बणा लिआ। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, आप जोत निरञ्जण सिख जोत निरञ्जण बणा लिआ। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, कलिजुग लै सार भवजल पार तरा लिआ। प्रगट जोत प्रभ ठाकर, महाराज शेर सिँघ भगत उधार सिखां नूं आण तरा लिआ। (२ जेठ २००७ बि)

कलिजुग किरपा कर प्रभ ठाकर, धरी जोत जगत निरँकारा जीओ। (२० जेठ २००७ बि)

महाराज शेर सिँघ आप प्रभ ठाकर, जिस ने पसरया सृष्ट पसारा। (२७ अस्सू २००७ बि)

हरि ठाकर अबिनाश, जोत प्रकाशया। हरि ठाकर अबिनाश, सर्ब घट वासया। हरि ठाकर अबिनाश, जन भगतां दासन दासया । हरि ठाकर अबिनाश, साचे मण्डल पावे रासया। हरि ठाकर अबिनाश, वेखे खेल पंडत काशया। हरि ठाकर अबिनाश, पंच चलाए शब्द स्वासया। हरि ठाकर अबिनाश, मेल मिलाए पृथ्मी आकाशया । हरि ठाकर अबिनाश, जोती जोत सरूप हरि, आदि पुरख पुरख अबिनाशया। (१७ हाढ़ २०१३ बि)

ठीकर : एका नाउँ आदि जुगादि प्रभ आपणे हत्थ रक्खे ठीक, ठीकर गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पंज तत्त काया चोला दए भन्नाईआ। (१४ भादरों २०१६ बि)
लक्ख चुरासी जो घड़या सो देवे भन्न, ठीकर नज़र कोई ना आइंदा। (२० माघ २०१६ बि)

सतिगुर कहणा मन्नो ठीक, काया ठीकर अन्तम कम्म किसे ना आया। (२ फग्गण २०१६ बि)
जिस ने घलया उसे लिआ सद्द, सद्दा दे के नाम बुलाईआ। पंज तत्त काया ठीकर गिआ भज्ज, आत्म परमात्म मिली चाईं चाईंआ। (४ अस्सू २०२१ बि)

ढईआ : गोबिन्द साची बंनै धार, पंचम मेल मिलाइंदा। मंचम मीता ख़बरदार, दिवस रैण सेव कमाइंदा। एका वहिगुरू फतिह बोल जैकार, पुरख अकाल इक्क सुणाइंदा। अन्तम देवे नाम अधार, एका शब्द सुणाइंदा। कलिजुग कूड़ा कूड़ पसार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। नानक लिखया लेख अपार, ना कोई मेट मिटाइंदा। गोबिन्द मीता मीत मुरार, अन्तम संग निभाइंदा। एका ढईआ अद्धविचकार, पिछला पन्ध मुकाइंदा । प्रगट होवे विच्च संसार, गोबिन्द आपणा वेस वटाइंदा। नाल रलाए पुरख करतार, निहकलंका नाउँ धराइंदा। सम्बल नगरी धाम नयार, सतिगुर साचा आसण लाइंदा। दिस ना आए विच्च संसार, कलिजुग

जीव सर्ब भुलाइंदा । गुरमुख विरले लए उभार, जो सरसे भेट चढ़ाइंदा। खिच लिआए चरन दवार, चरन चरनोदक मुख छुहाइंदा। दरस दखाए अगम्म अपार, स्वछ सरूपी नज़री आइंदा। लक्ख चुरासी सोए पैर पसार, गूड़ी नींद ना कोई उठाइंदा। पंचम विकार देण प्यार, आसा तृष्ना संग रलाइंदा। हउमे हंगता करे ख़वार, माया ममता विच्च फसाइंदा। मनमुख जीव नार विभचार, साचा कन्त ना कोई हंढाइंदा। घर घर मदिरा मास होए अहार, हरि का नाम ना कोई गाइंदा। कलिजुग अन्तम लै अवतार, आप आपणा नाउँ धराइंदा। खड़ग खण्डा तेज कटार, तन गातरे आप छुहाइंदा। गुरमुख साचे कर त्यार, एका अक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाइंदा। कलिजुग अन्तम वेस वटाया, हरि साचे वड वडयाईआ। निहकलंका जामा पाया, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी रिहा सुणाया, सोया कोई रहण ना पाईआ। नाम डंका इक्क वजाया, चार वरन करे पढ़ाईआ। राम कृष्न आप अखवाया, नानक गोबिन्द वेस वटाईआ। ईसा मूसा नाउँ धराया, संग मुहम्मद करे कुड़माईआ। चारे वेदां आपे गाया, ब्रह्मा सेवा लाईआ। शास्त्र सिमरत आप उपजाया, आप आपणी दया कमाईआ। पुरान अठारां लेख लिखाया, चार लक्ख हज़ार सतारां सलोक जणाईआ। गीता ज्ञान आप दृढ़ाया, अठारां ध्याए आपे गाईआ। अञ्जील कुरानां लेख लिखाया, बाईबल करे आप रुशनाईआ। खाणी बाणी वेख वखाया, अगाध बोध भेव खुल्ह़ाईआ । सतिजुग त्रेता द्वापर डेरा ढाया, कलिजुग वेला अन्तम आईआ । प्रभ का भाणा ना सके कोई मिटाया, आदि जुगादि वड्डी वडयाईआ। साचा राणा बण के आया, राज राजाना रिहा खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नौं खण्ड पृथ्मी वेखे थाउँ थाईंआ। (८ सावण २०१६ बि)

सतिगुर गोबिन्द हो मेहरवान, घर साचे खुशी मनाइंदा। सभना देवे सिक्खी दान, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। गुरसिख तेरे काया मन्दर होवे प्रकाश, जोत निरञ्जण सहाए रव सस चन्द शरमाइंदा। तेरा राह तक्कण गोपी काहन, दिवस रैण नैण उठाइंदा । तेरे चरन ध्यान लगाइण ब्रह्मा विष्न शिव कर ध्यान, दर तेरा उच्च सुहाइंदा। मेरा मन्दर तेरा मकान, सचखण्ड दवारा सोभा पाइंदा। भुल्ल ना जाए सच निशान , सीस दस्तार इक्क बंनाइन्दा । एका ढईआ आपे विच्च जहान, कलिजुग रेखा अन्त मुकाइंदा। प्रगट होवे वाली दो जहान, निहकलंका नाउँ रखवाइंदा। गुर गोबिन्द सूरबीर सुल्तान, गुर सतिगुर साचा नाल रखवाइंदा। पंज तत्त ना वेखे कोई कर ध्यान, हड्ड मास नाड़ी रत ना रचन रचाइंदा। एका चिल्ला तीर कमान, हरि शब्दी रंग रंगाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां मारे एका बाण, लक्ख चुरासी बच्या कोई रहण ना पाइंदा। निमाणयां देवे एका माण, गरीब निमाणयां गले लगाइंदा। राज राजानां शाह सुल्तानां मेटे जगत निशान, सीस ताज ना कोई रखवाइंदा। नौं खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां देवे इक्क ज्ञान, पुरख अकाल एका इष्ट वखवाइंदा। पारब्रह्म सरनाई चार वरन डिगण आण, ब्रह्मा विष्न शिव ना कोई ध्याइंदा। लेखा चुकाए वेद पुरान, अञ्जील कुरान ना कोई पढ़ाइंदा। शास्त्र सिमरत ना करे कोई ध्यान, तिलक ललाट ना कोई वखाइंदा। शब्द अनादी कर परवान, घर घर मंगल साचा गाइंदा। पंज तत्त ना पूजा

करे कोई जहान, निरगुण सतिगुर इक्क अखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, आपणा खेल खिलाइंदा। (१७ कतक २०१६ बि)

हरि संगत तेरा रूप अनोखा, चार जुग मिले वड्डिआईआ। गुरसिख गुरसिख किसे नाल करे ना कोई धोखा, सच सुच इक्क समझाईआ। माणस जन्म प्रभ मिलण दा मौका, लक्ख चुरासी विच्चों नज़री आईआ । कूड़ी क्रिया अंदर ना होणा थोथा, होछी मत ना कोई वड्डिआईआ । काया अंदर आपणा खोल़ु के पड़ो़ पोथा, पुस्तक हरि जी आप लिखाईआ। जिस दे अंदर लुके चौदां लोका, चौदां तबक मुख छुपाईआ। तिस दा नाम इक्क सलोका, सोहला इक्को इक्क वड्डिआईआ। उस साहिब दी रक्खो ओटा, पुरख अकाल सची सरनाईआ । जिस वसाइआ पटणा पौंटा, अन्त नदेड़ गिआ समझाईआ। सो इक्को ढईआ सुत्ता रिहा ला के ढौंका, सचखण्ड आपणी सेज बणाईआ। कलिजुग अन्तम साढ़ु तिन्न हत्थ आपे वेखे कोठा, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। पुरख अकाल सतिगुरू इक्को बहुता, बहुते गुरू कम्म किसे ना आईआ। काया अंदर मार के वेखो गोता, हीरे माणक लाल जवाहर मेरा नाउं घर घर विच्च नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि संगत सतिजुग सच करे पढ़ाईआ। (२५ सावण २०२० बि)

जगत कलाक वक्त ढाई, ढईआ गोबिन्द वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल वेख्या हिंदसा इकाई, ज़ीरो सिफ़र ना अक्ख मिलाईआ। ख़ालक तक्की ख़लक खुदाई, खुद आपणा नैण उठाईआ। शब्दी धार बण के राही, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। निरगुण सरगुण वेखे थाउँ थाईं, दीन दुनी फोल फुलाईआ। अवतार पैगम्बर गुर जगाई, आसल निंदरा रिहा मिटाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पताल रिहा हिलाई, हल्ला आपणा नाम कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रिहा उठाई, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुलाईआ। आप हो के बेपरवाही, बेपरवाही विच्च समाईआ। चार जुग दा लेखा दिउ दृढ़ाई, सनमुख हो के दिउ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुलाईआ।
वक्त ढाई दा गोबिन्द मुकया ढईआ, ढाबां तालाबां विच्च पए दुहाईआ। आपणा लेखा सारे कढ़ु वहीआ, वाअदा धुर दा पूर कराईआ। हुक्म देवे साहिब सुल्तान धुर दा सईआ, सतिगुर नूर अलाहीआ। किस वहण विच्च वैहन्दी जगत नईआ, नौका रूप कवण बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

ढाई कहे ढईआ गिआ बीत, बीती समझ किसे ना आईआ। सारे वेखो आपणी आपणी रीत, की पूरब कार कमाईआ। कलमा जाणो गीत, आत्म परमात्म सिफ्त सालाहीआ। मन्दर वेखो मसीत, मट्ठां अक्ख खुलाईआ। जाति वेखो ऊँच नीच, राओ रंक भेव ना राईआ। किस नाल लग्गी प्रीत, सच दिउ समझाईआ। की होया बख्शीश, रहमत की कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।
ढईआ कहे मैं रिहा लंघ, आपणा वक्त लंघाईआ। गोबिन्द किसे ना लाया अंग, अंगीकार ना कोई बणाईआ। निझ पाया किसे ना अनन्द, पारमानंद ना कोई वडयाईआ। मैं कर

के गिआ जंग, खण्डा खड़ग खड़काईआ। छड्ड के पुर अनन्द, नदेड़ दित्ता वसाईआ । गा के अन्तम छन्द, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाहीआ। आपा कर के बन्द, प्रभ दे विच्च टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ।

गोबिन्द कहे मेरा ढईआ चंगा, चार जुग दा लेख जणाईआ। पैहलों लेखा मुका के जमना सुरसती गोदावरी गंगा, गहर गम्भीर नाल मिलाईआ। अरजन नूरी चढ़ा के चन्दा, रावी रविदास वाली दुहाईआ । शब्द सिँघासण वेख पलंघा, कखां सेज सुहाईआ। दीन दुनी जाण के दंगा, दगेबाज़ी खोज खुजाईआ। डंका अगम्म वजा मरदंगा, मर्द मरदान दित्ता कराईआ। भरम भुला के बन्दा, बंधना विच्च फसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

ढईआ कहे मैनूं क्यों नहीं कहन्दे दो अद्धा, अधिआत्म भेव कोई ना पाईआ। मैं सभ नूं देवां सद्दा, होका हक़ जणाईआ। जेहड़ा पुरख अकाल कदे ना लभ्भा, नेत्र दरस कोई ना पाईआ। जिस ने शस्त्र धार दुर्गा बणाई हत्थ विच्च फड़ा के गदा, गदागर जंगलां विच्च कराईआ। जिस ने अवतारां वखां के आपणी हद्दा, हदूद विच्च फसाईआ। जिस ने पैगम्बरां सुणा के नद्दा, नौबत नाम हक़ दृढ़ाईआ।२ जिस ने गुरूआं दस्स के आपणी वजह, भेव अभेद दित्ता खुल्ह़ाईआ। जिस ने गोबिन्द माण दित्ता हत्थ सज्जा, सज्जण हो के वेख वखाईआ। चला के आपणी विच्च रज़ा, मेहर नज़र उठाईआ। अन्त संदेशा दित्ता उप्पर लबां, ज़बान सक्कया ना कोई हिलाईआ। जोती धार वड़या मधा, नेत्र नज़र किसे ना आईआ । दीपक जोत हो के जगा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। गोबिन्द तेरा जगत वाला नहीं अग्गा, दुनी वाली नहीं वडयाईआ। सच देवां अनोखा पदा, पदवी इक्को इक्क जणाईआ। जद उपजें ते उपजें मेरी यदा, दूजा रूप ना कोई प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक्क सुणाईआ।

ढईआ कहे गोबिन्द नहीं तन वजूद, माटी ख़ाक ना कोई वडयाईआ । गोबिन्द हक़ इक्क महबूब, मुहब्बत विच्च समाईआ। गोबिन्द उह मंज़ल मकसूद, जिस नूं चढ़न कोई ना पाईआ। गोबिन्द उह अर्श अरूज, आलीशान इक्क अखवाईआ। गोबिन्द उह अगम्म हदूद, जिस दा आर पार ना कोई जणाईआ । गोबिन्द उह सदा मौजूद, जो हर घट रिहा समाईआ। गोबिन्द उह जो भगतां करे महिफ़ूज़, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। गोबिन्द उह जेहड़ा आदि अन्त ना होवे नेसतो नाबूद, करनी दा करता नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, प्रेम प्यारा प्रीतम इक्को सोभा पाईआ।

ढईआ कहे जन भगतो मैं दस्सण आया धर्म धार दा धरमा, धामी अनामी अन्तरयामी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा हुक्म मन्नदे विष्न शिव शिव विष्न विष्न शिव ब्रह्मा, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म विच्च समाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी ना कोई कर्मा, निहकर्मी निहकर्मी निहकर्मी आपणी कार वरताईआ। जिस दवारे ना जम्मणा ना मरना, जम्मण मरन खेल ना कोई खिलाईआ। ना सीस जगदीश ना ढहणा कोई सरना, चरन चरनोदक रस ना कोई बणाईआ। ना लिखणा ना पढ़ना, खेल अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। ढईआ कहे मैं सच दस्सां जो साहिब मेरे खेल करना, करनी दा करता आपणा हुक्म वरताईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आपणा खेल वखाईआ।

ढईआ कहे गुरमुखो कोई धार नहीं एह दूजी, गोबिन्द कूक कूक दए दुहाईआ। जेहड़ी गुर अवतार पैगम्बर धार जुग नहीं सूझी, अक्खरां विच्च ना कोई लिखाईआ। विचार आई ना किसे विच्च बुद्धि, जगत राह ना कोई बदलाईआ। प्रकाश नूर ना होई उदी, उदे असत ना कोई वडयाईआ। उह खेल दस्सां गूझी, रमज़ हमज़ नमज़ विच्च प्रगटाईआ। जिस दी उडीक करदे अवतार पैगम्बर जुगी, जगत ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ।

ढईआ कहे जन भगतो प्रभ ने बदल जाणा रवईआ, समझ समझ ना कोई समझाईआ। आत्म ब्रह्म दा बण के सईआ, सयाह हो के दो जहानां वेख वखाईआ। दीन दुनी दी पकड़े कोई ना बहीआ, अंगी अंग ना कोई लगाईआ। मेरे उत्ते गोबिन्द पा के गिआ सहीआ, साहिब सतिगुर आपणी दया कमाईआ। तेई अवतारां इक्क आवाज़ कहीआ, बिन रसना जिह्वा अलाईआ। पैगम्बर कहण हक़ खुदा बदल देणा रवईआ, रहीम रहमत विच्च आपणा रैहम कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

ढईआ कहे मैं गोबिन्द तक्कया, तक्कया नूर अलाह। जिस ने पंचम जेठ खेल करना मदीने मक्कया, मंबर मुनारे वेखे नाल चाअ। नूर अल्लाह इक्क शब्द सुणाए अकथया, धुर दा नगमा आए गा। जेहड़ा अमाम किसे नहीं लम्भया, पंजां नूं आपणा दरस आवे दखा। उह वेखण लहिंदे तों चढ़दी हद्दया, सजदे विच्च करन दुआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर धरनी होए सहाईआ।

ढईआ कहे संदेशा देणा नाज़ाकूमी पोप, पुशत पनाह हत्थ टिकाईआ। जेहड़ा मसीह होया अलोप, लोचन नज़र किसे ना आईआ। लभ्भदे कोटी कोट, खोजण ध्यान लगाईआ। उह प्रकाश कर के निर्मल जोत, नूर आए चमकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स सलोक, सुत्तयां लए उठाईआ। हक़ खुदा दी जिस मानणी मौज, भारत वज्जे वधाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर सारे होए फौत, मकबरयां विच्च डेरा लाईआ। सो सभ दी मेटण आया अदौत, अदल इन्साफ़ इक्क कमाईआ। छेती जाणा पहुंच, मार्ग सिध्धा दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप खलाईआ।

ढईआ कहे मैं वेखी तलवंडी वाली ढाबा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। मैनूं मिल्या नानक पैहलों बाला ते अन्तम बुढ्ढा बाबा, बाहर दा लेखा नाल रखवाईआ। जिस इशारा कीता उंगल नाल वल काअबा, किबलेअज़ जणाईआ। महबूब तक्कां कवण महराबा, महरम नूर अलाहीआ। झट्ट बगल विच्चों कढिआ की लेखा लिखया विच्च बगदादा, बगलगीर कवण अखवाईआ। जिस दे पिच्छेगुजारी निमाज़ा, सीने हत्थ टिकाईआ। रोज़यां विच्च दितीआं बागाँ, अज़ान नूर अलाहीआ। ओस दा लेख ना पुंन ना सवाबा, भेव अभेदा ना कोई खुल्लाईआ। ढईआ कहे मैं नानक दे चरन तक्कया जां निगाह पई ते मैनूं नज़री आया वाला बाजां, गोबिन्द सोहणा सोभा पाईआ। जां फेर वेख्या उस दा भगतां नाल वाअदा, वाअदे सभ दे पूर कराईआ। मैं हस्स के किहा मैनूं दुःखड़ा काहदा, दर्द रिहा ना राईआ। हत्थ जोड़ के करी बेनन्ती, दीन दुनी दे मालक आपणा सम्बल इक्क वसा जा, वस्ती इक्क वडयाईआ। ख़बर संदेशे दे दे प्रगट हो जा देस माझा, उहला अग्गे रहण ना पाईआ। हुण भरम भुलेखा काहदा,

कदीम दे मालक कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म जणाईआ।

ढईआ कहे मेरे गोबिन्द हुण कर देवीं ऐलान, ऐलानीआं आपणा हुक्म जणाईआ। जे तेरा रूप श्री भगवान, क्यों बैठा मुख छुपाईआ । मैनूं अैं दिसदा सतारां हाढ़ दिवस महान, पंचम सम्मत शहनशाही वडयाईआ। ख़बर दे देणी जो दुनियां दे प्रधान, निशाना सति उठाईआ। प्रगट हो के औणा विच्च मैदान, सूरबीर आपणा बल प्रगटाईआ। इक्क वेरां मैनूं सभ ने कहणा शैतान, जो सभ दी शरअ रिहा ठुकराईआ । ढईआ कहे मैं निउँ निउँ तेरे चरन जावां कुरबान, विटुह आपणा आप कराईआ। मैं चौहन्दा तेरे नाम दा चार कुण्ट चढ़े तुफ़ान, अन्धेरा कूड़ देणा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धरनी दा मस्तक देणा बदलाईआ।

ढईआ कहे तेरा हुक्म होवे ज़रूरी, जाहर जहूर तेरी रुशनाईआ। जे तूं जिस्म नज़री आ सभ दा इसम ज़लवागर नूरी, नूर नुराना नूर चमकाईआ। मंज़ल मुका नेड़ दूरी, दो जहानां आपणा फेरा पाईआ। जिथ्थे तेरे सन्त भगत सूफ़ीआं दे चरन धूढ़ी, रातीं सुत्तयां दिने जागदिआं लै उठाईआ। प्रभू तूं केहड़ी भुक्खे ने खाणी कड़ाह पूड़ी, हलविआं विच्च ना मन धराईआ। आपणे नाम दी मसती प्रेम दी सरूरी, शब्द शब्द विच्च वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ।

ढईआ कहे मैं लेखा दस्सां आप, पिछला ध्यान लगाईआ। गोबिन्द नज़र आया साख़िआत, सति सरूप सोभा पाईआ। गोबिन्द किहा पिच्छे झाक, पूरब वेख वखाईआ। जां वेख्या ढाई दिन राम ने एथे कीता सी जाप, घुटने धरती उत्ते टिकाईआ। कन्नां ते ला के हाथ, नैण लए दबाईआ। जिस वेले आवे प्रभू आप, मेरे राम राम होवें सहाईआ। लै के धूढ़ी राख, मस्तक नाल छुहाईआ। कछु के मुख विच्चों वाक, उंगल नाल दित्ता लिखवाईआ। जिस ने पैगम्बरां दा बणना बाप, गोबिन्द दा पिता माईआ। सभ दा लेखा लैणा हिसाब, बचया रहण कोई ना पाईआ। राम ने आपणा नाखुन लिआ काट, खब्बा अंगूठा दन्दां हेठ चबाईआ। मुखों किहा कोई धर्म दा रहणा नहीं हाट, पेशानी तली उत्ते रखवाईआ। लागिउँ सीता गई कांप, मेरे राम दुहाईआ। कोई नहीं दिसदा साथ, संगी संग तजाईआ। रिहा ना कोई विश्वास, विशिआं विच्च देणे हलकाईआ। सति होणा पाश पाश, टुकड़े टुकड़े लोकाईआ। राम ने तक्कया उप्पर आकाश, आसण एसे थां विछाईआ। मेरे राम तेरा केहड़ा पत्तन केहड़ा घाट, मैनूं दे वखाईआ। कवण पूजा कवण पाठ, कवण मिले वडयाईआ। शब्द अगम्मी आवाज़ आई मेरा ग़रीबां नाल साथ, चुमयारां रंग रंगाईआ। बल दवारे लिआ झाक, बल दा नंन्ना बेटा धर्म धार दी गोली जुगिंदर दित्ता समझाईआ। भगतां दी आत्म सेजा मेरी खाट, दूजा सुखआसण ना कोई वडयाईआ। हिरदे अंदर मेरी बात, बातन भेव खुल्लाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

ढईआ कहे कुछ औंदा जांदा समां, समझ दिआं जणाईआ। प्रभ ने खेल करना नवां, नवां रूप बदलाईआ। माण गवा के माटी चंमां, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। जन भगतां दा लेखा रक्ख के आपणे कोल दमां, दामनगीर आप हो जाईआ। पता नहीं केहड़े वेले आपणे

लिखारीआं नाल लै के किधर नूं हो जाए रवां, माता पिता हत्थ किसे ना आईआ। राम कहे ना कोई हरख सोग ग़मा, चिन्ता ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

धरनी कहे मैं पैर चुम्मणे, बिन रसना रस लगाईआ। जिस दे भगत मेरे उत्ते घुंमणे, नौ खण्ड पृथ्मी आपणे हेठ दबाईआ। मैं शब्द संदेशे सुणने, ढोले अगम्म अथाहीआ। जगत जगिआसू जगत वासना विच्च रुलणे, सके ना कोई बचाईआ। अवतार पैगम्बरां सीस झुकणे, मन्नण इक्क खुदाईआ। धुर दे हुक्म कदी ना रुकणे, गोबिन्द रिहा दृढ़ाईआ। जगत विकारी मूल ना मुकणे, वेखे थाउँ थाईआ। जन भगतो तुहाथों लेखे अग्गे किसे नहीं पुच्छणे, सभ दे लेखे एथे देणे मुकाईआ। राम ने घुटने उप्पर रक्ख के घुटने, आसण लिआ वटाईआ। जिस वेले पैगम्बर पैग़बरां नाल जुटणे, दीन दुनी दए हलाईआ। अर्शां दे तारे टुट्टणे, टुट्टी नूं सके ना कोई जुड़ाईआ। गुरमुखां दे फड़ने गुटणे, गल आपणे लैणे लगाईआ। एह नाते पिता पुत्त ने, अग्गे सके ना कोई तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ।

ढईआ कहे मैं अज्जे तक्क रिहा डावां डोल, मेरी धीर ना कोई धराईआ। मैं दूरों दूरों सुणदा रिहा बोल, शब्दी आवाज़ ध्यान लगाईआ। चार कुण्ट रिहा टटोल, वेख्या थाउँ थाईंआ। अज्ज पता लग्गा राम एसे ज़िमीं उत्ते आपणे राम दा ला के गिआ पोल, निशाना इक्क बणाईआ। जिस धरती नूं कहन्दे गोल, उस गोल दी चपटी चप्पा चप्पा वेखे थाउँ थाईंआ। दरबवासी रोल, गरभ वासी दए सज़ाईआ। जन भगत विच्चों कढ्ढु निरोल, आप आपणी दया कमाईआ। आपणे जन्म कर्म दा लेखा कोई ना सके फोल, बुद्धि विच्च ना कोई चतुराईआ। सच दा तोले कोई ना तोल, नाम कन्ढ्ढा हत्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्को नज़री आईआ।

ढईआ कहे भगतो किसे दी ना करयो गुलामी, दर मंगण कदे ना जाईआ। तुहाढ्ढी रीती ना रही पुराणी, पराण अधारी दिती बदलाईआ। बुढ्ढुयां नढ्ढुयां दी इक्को जवानी, इक्को रंगण नाम रंगाईआ। तुहाढ्ढा मालक शाह सुल्तानी, शहनशाह नूर अलाहीआ। जिस दा खेल दो जहानी, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। जिथ्थे राम ने खाधी महिमानी, ओसे दी एह निशानी, जिस ने निगाह रक्खी उप्पर असमानी, इसम आज़म इक्क तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच नाल वडयाईआ।

ढईआ कहे जन भगतो बिन जगाइआं जागो, जगत आलस निंदरा गफ़लत देणी तजाईआ। इक्क दी सरनी लागो, लग मातर दा डेरा ढाईआ। हँस बण जाओ कागो, सोहँ हँसा जाप मिले धुरदरगाहीआ। मन कल्पणा साधो, साध धुर दे दिआं बणाईआ। बिना रसना तों अराधो, अंदर वड़ के मिलां चाईं चाईंआ। सुणो अगम्मी आवाज़ो, धुन दिआं उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेशक सभ नूं कह देणा सानूं प्रभू प्यारा लाधो, जे हड़ा लभयां हत्थ किसे ना आईआ। (२६ चेत शहनशाही सम्मत ५)

ढोर : प्रभ साचे दी भुल्ल गए सारे लोड़, मन वासना रहे वधाईआ । माणस होए अन्तम ढोर, मनुष रूप ना कोई जणाईआ। (२१ जेठ २०२०)
जो सोहँ शब्द सुणन तों होया रिहा ढोरा, तिस जून अजून भवावेगा। मरे मर जन्मे मात गरभ पकदा रहे बौरा, दर्दी दर्द ना कोई वंडावेगा। (१८ अस्सू २०२० बि)

मानस बुद्धि हो गई पशूआं, ढोरां वरगे नज़री आईआ। शरअ शरीअत बद्धे नाल रस्सीआं, ज़ात पात फंद ना कोई कटाईआ। मन वासना सारीआं फिरन नस्सीआं, भज्जण वाहो दाहीआ। हरि कन्त मिलके सच घर कदे ना वस्सीआं, धुर दी होई जुदाईआ। (१६ पोह २०२१ बि)

कत्तक कहे सदी चौधवीं दे मनुषां नालों चंगे ढोर, जो खा पी के प्रभ दा शुकर मनाईआ। (१ कत्तक श सं ५)
मानस जाति होई पसू ढोर डंगर, जो प्रभ नूं गए भुलाईआ। (२८ माघ श सं ५)

ढोडा : ढोडा कहे मैनूं कोई ना कहो टिक्की, जो हत्थां नाल पकाईआ । मैथों सुण लउ साची सिक्खी, सिख्या धुर दी दिआं दृढ़ाईआ। नंदू कोल पिछले जन्म दी चिठ्ठी, जिसदा लेखा रिहा चुकाईआ। ढोडा कहे मेरी मिन्नत मन्न के सारे इक्की, इक्की सोहणी पंगत बणाईआ । जिस दी धार गुरमुख लिखी, उह देवणहार वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। इक्की इक्की बैठ जाणा विच्च कतार, चारों कुण्ट घेरा पाईआ। पंजां वरतौणा नाल प्यार, चारों कुण्ट सेव कमाईआ। इक्की मिन्ट दा एह विहार, बहुती डेर ना कोई जणाईआ। भोरा छड के ना जायो कोई विच्च थाल, हत्थां उत्ते देणा फड़ाईआ। एहो प्रेम दे विच्चों निकलयों प्यार, मुहब्बत विच्चों मुहब्बत लई प्रगटाईआ। भावें एह नहीं कड़ाह परशाद, सवाद उहदे नालों चंगा आईआ। एह नंदू दी रह जाए याद, सरदारी बुणयाद आबाद खेड़ा दए वखाईआ। पुरख अकाल तुहाढ्ढे सभ दे होवे साथ, अनाथां दा अनाथ, दीनां दा दीन नज़री आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा साची वस्त भगतां दी झोली पाए सुग़ात, एह भरी रहे परात, दुख भुख सभ दी रिहा गवाईआ। (१० चेत श सं १)

तत्त : हरिजन लेखा हरि जू हत्थ, जुग जुग आप चुकाइंदा। जुग जन्म दे विछड़े कर इक्ठ, निहकरमी कर्म कमाइंदा। पड़दा लाह के तत्त अठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मत बुध फोल फुलाइंदा। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, हड्ड मास नाड़ी खोज खुजाइंदा। आपणे मिलण दी खोल्ह के अक्ख, निझ नेत्र पड़दा लाहिंदा। प्रेम प्रीती अंदर हो के वस, वासता आपणे नाल जुड़ाइंदा । किरपा कर पुरख समरथ, हरिजन साचे गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। (१६ सावण २०२१ बि)
पंज तत्त तेरा अखाड़ा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वंड वंडाईआ । (२० भादरों २०२१ बि)
त्रैगुण माया वेस मात उपजाईआ। आप उपाया ब्रह्मा शिव, विष्नूं संग रलाईआ। चवीआं

तत्तां आपे गणा*, ब्रह्मे दे मत रिहा समझाईआ। लक्ख चुरासी करनी उतपत, साचा हुक्म रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, ब्रह्मे देवे इक्क वडयाईआ।

ब्रह्मे आपणा आप विचार, सर्ब कुछ पछाणया। जिस कीआ मेरा अकार, नर हरि श्री भगवानया। दिती वस्त इक्क अपार, त्रैगुण वस्त सर्ब कुछ जाणिआ। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भेव आप छुपानया।

ब्रह्मे कीआ इक्क अकारा। माया रूपी सगल पसारा। चवी तत्त कर इक्ठे, इक्क बणाया पुतला भारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वसे तों बाहरा।

चवी तत्तां करी त्यारीआ। खाली बुत्त मूंह दे भारीआ। किरपा करे आप अचुत, पारब्रह्म खेल नयारीआ। उपजे जल ना साचा सुत, ब्रह्मा कर कर थक्का कारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा एका देवे, करे आप हुशिआरीआ।

ब्रह्मे बुत्त बणाया, ना मात जवा लिआ। आपणा माण गवाया, पुरख अबिनाशी इक्क धिआ लिआ। पुरख अबिनाशी दया कमाया, पंझीवां तत्त जोती दीपक इक्क जगा लिआ। हड्ड नाड़ उबली रत, वाह वाह संपट सुहणी ला लिआ। विच्च रखवाई मन मत, बुधी तीजा साथ रखा लिआ। सिर मूंह नक्क हत्थ, कन्नां पैरां नाल सजा लिआ। साची वस्त इक्क टिकाई हरि समरथ , काया मन्दर इक्क सुहा लिआ। प्रभ का भेव सदा अकथ्थ, जुगा जुगन्तर भेव किसे ना पा लिआ। आपे रिहा सभ नूं मथ्थ, आपे मारे आप जवा लिआ। सगल वसूरे जाइण लथ्थ, जिस जन हिरदे आप वसा लिआ। शब्द चढ़ाए साचे रथ, साचा डोला इक्क सजा लिआ। पंजां चोरां पक्कड़े नथ, वागाँ अंदरे अंदर भवा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर, आपणी बणत बणा लिआ।

ब्रह्मे बणत बणाई, जोत उपाईआ। ना कोई दिसे थाईं विच जिमीं अकासे जिथ्थे दए बहाई, उप्पर जल दे रिहा टिकाई, कँवल फुल ना भार उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, दोवें जोड़ रिहा धिआईआ ।

प्रभ अबिनाशी किरपा कर, माया आप पसारीआ। धरत मात जल उप्पर धर, लाई इक्क किआरीआ। जुगा जुगन्तर भेख धर, आपे पावे आपणी सारया। जीआं जंतां वेख हरि, जीआ दान अन्न उभारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे सर्ब पसारया। (१६ हाढ़ २०१२ बि)

तस्वीर : सतिगुर शब्द कहे मैं गहर गम्भीर, गवर गहर गहर वडयाईआ। मेरी नज़र ना आए किसे तस्वीर, मुसव्वर बणत ना कोई बणाईआ। मेरी मंज़ल इक्क अख़ीर, मेरी चोटी बेपरवाहीआ । मेरा लेखा तत्त सरीर, पंज तत्त करां कुड़माईआ। मेरा प्रेम अमृत सीर, रस इक्को दिआं वखाईआ। मेरी मुहब्बत धुर ज़ंजीर, लोकमात सके ना कोई तुड़ाईआ। मेरा सज्जण होए ना कदे दलगीर, हैरानी विच्च कदे ना आईआ। मैं शाहां दा शाह हकीरां दा हकीर, नीचां विच्चों नीच, ऊँचां विच्चों ऊँच नज़री आईआ। मैं पैगम्बरां दा पैगम्बर फ़कीरां दा फ़कीर, शहनशाहां दा शहनशाह पातशाह आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी धुर दी बणत बणाईआ। (२४ जेठ २०२१ बि)

निरगुण सरगुण खेल ज़ीरो, समझ कोई ना पाइंदा। निरवैर पुरख धुर दा हीरो, हरि जू आपणा वेस वटाइंदा। कड्ढे कर गुर अवतार पैगम्बर पीरो, पारब्रह्म प्रभ सच जणाइंदा। वेखो खेल बेनज़ीरो, निगाहबान आप दृढ़ांइंदा। जिस दी आदि जुगादि किसे हत्थ ना आई तस्वीरो, मुसव्वर तसव्वर ना कोई कराइंदा। एका खेल अन्त अख़ीरो, हरि करता कार कमाइंदा। लक्ख चुरासी जीव जंत कटाएजो ज़ंजीरो, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाइंदा। (१७ हाढ़ २०२१ बि)

मेहर नज़र देवे अमृत सीर, अंमिउँ रस आप वखाइंदा। कूड़ी क्रिया कट शरअ ज़ंजीर, शरीअत इक्को इक्क दृढ़ांइंदा। सति सरूप सच तस्वीर, सति सतिवादी आप समझाइंदा। मेल मिलावा बीरन बीर, सूरबीरता इक्को हत्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप प्रगटाइंदा। (१६ सावण २०२१ बि)

उठ वेख वेख अख़ीर, आखर हरि दृढ़ांइंदा। तेरे विच्चों मेरी नज़र आवे तस्वीर, तसव्वर होर ना कोई कराइंदा। तेरे पिच्छे हो फ़कीर, फ़िकरा हक़ इक्क सुणाइंदा। तेरा लेखा देवे गुणी गहीर, गहर गवर झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। (१ भादरों २०२१ बि)

सच संदेसा देवे अन्त अख़ीर, हरि आखर आप सुणाइंदा। नेत्र नैण तक्को गुर अवतार पीर, पैगम्बर इक्को नज़री आइंदा। जिस दी असल सच तस्वीर, तसबी माला ना गल लटकाइंदा। जिस दा नूर बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र कोई ना पाइंदा। जिस दा लेखा हस्त कीट, लक्ख चुरासी अंदर डेरा लाइंदा। जिस दा नाम शब्द अनडीठ, जगत हत्थ ना कोई फड़ाइंदा। जिस दा लेखा मन्दर मसीत, शिवदवाले मद्ध गुर दर खोज खुजाइंदा। जिस दा नित नवित्त अनोखा गीत, गुर अवतार पीर पैगम्बर सर्ब ध्याइंदा । जो सच स्वामी सदा निहकामी अन्तरजामी मीत, मित्र प्यारा इक्क अखवाइंदा। जिस दे ताज सोहवे सीस, जगदीश आपणा हुक्म समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर बाले निक्के नाचीज़, माण अभिमान सर्ब मिटाइंदा। जिस वेले लंघे सच दहलीज़, सीस उप्पर ना कोई उठाइंदा। प्रभ चरनी चरन सच प्रीत, प्रीतीवान इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप मनाइंदा।

(१ भादरों २०२१ बि)

श्री भगवान कहे मेरी अक्ख बेनज़ीर, नाज़क सभ नूं आप बणाईआ । जिस दी कोई ना जाणे अकसीर, अकसरीअत विच्च वंड ना कोई वंडाईआ। नक़शे विच्च ना कोई तस्वीर, मुसव्वर तसव्वर सके ना कोई कराईआ। जिस दे उत्ते मेहर कर बदल देवां तक़दीर, तदबीर आपणी इक्क दृढ़ाईआ। जो अंदर बाहर चोटी वेखे इक्क अख़ीर, आख़र इक्को घर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो अक्ख प्रतक्ख जन भगतां दए खुल्ह़ाईआ ।

(२० भादरों २०२१ बि)

मेहरवान दाता दानी गहर गम्भीर, गुर शब्दी इक्क अखवाइंदा । पंज तत्त लेखा जाणे सरीर, नाड़ी नाड़ी हाडी हाडी फोल फुलाइंदा । जिस दी खिच्च ना सके कोई तस्वीर, रूप

रंग रेख ना कोई समझाइंदा। सो मंज़ल चोटी चढ़ दे बैठा अख़ीर, घर घर विच्च डेरा लाइंदा। जन भगतां कट शरअ ज़ंजीर, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। बिन वेखयां बिन सुणयां बिन मंगयां बिन जाणयां बदल देवे तक़दीर, तदबीर आपणी इक्क दृढ़ांइंदा। लेखा जाणे शाह हकीर, हक़ीक़त विच्चों हक खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाइंदा। (२५ भादरों २०२१ बि)

सति धर्म कहे मैं वेख्या गहर गम्भीर, हरि करता बेपरवाहीआ। जिस दा तत्त ना कोई सरीर, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। उह ख़ालस बेनज़ीर, ख़ालक मालक बेपरवाहीआ। मैं उस दी जन भगतां अंदर तक्की तस्वीर, जिस दा ख़ाका सके ना कोई समझाईआ। उह पीरां दा पीर, गुरूआं दा सतिगुर नाउँ धराईआ। उह शहनशाह पातशाह इक्क अख़ीर, आख़र सभ नूं हुक्म मनाईआ। उथे कोई लग्गी ना दिसे भीड़, गुरमुख विरले थोड़े थोड़े नज़री आईआ। जिनां दी बंनी उस ने आप बीड़, बेड़ा कंध उठाईआ। पार कराए जगत लकीर, लाहनत टिक्का सभ दे मगरों लाहीआ। अग्गे मार के आपणा, ज़ंजीर, ज़ंजीर शरअ दित्ता तुड़ाईआ। साची बख्श इक्क तौफ़ीक, तबीअत सभ दी ख़ुश रखाईआ। मुशर्द हो के बणया मुरीद, मुरीद हो के मुशर्द मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां घर साचे करें दीद, दाअवे नाल आपणे नाल मिलाईआ। (३ अस्सू २०२१ बि)

सुणो संदेसा गहर गम्भीर, समरथ कला आप जणाइंदा। प्रभ दा खेल सदा बिन सरीर, तदबीर आपणी आप प्रगटाइंदा। बन्द होया ना कदे विच्च शरअ ज़ंजीर, दीन मज़हब ना कोई रखाइंदा। जिसदी नज़र ना आए जगत तस्वीर, सो भगतां अंदर डेरा लाइंदा। जिस नूं मंज़ल चढ़ चढ़ लभ्भदे गए सूफी फ़कीर, फ़िकरयां नाल ढोले गा गा सर्ब सुणाइंदा। सो कलिजुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण रूप सति स्वामी आया घत्त वहीर, वाहो दाही आपणा पन्ध मुकाइंदा। करे खेल बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। गुरमुखां चोटी चढ़ के आप अख़ीर, घर साचे रंग रंगाइंदा। जिस मन्दर अंदर दा मालक इक्क कबीर, ओसे मंज़ल अन्त अख़ीर भगत सुहेले आप बहाइंदा। आप पातशाह शहनशाह सचखण्ड दवारे दूजा भगत वजीर, तीजा नज़र कोई ना आइंदा। ओथे पत्थरां वाली नहीं कोई लकीर, हरफ़ां वाली नहीं कोई तदबीर, बिन अक्खरां आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, जिथ्थे गुरू अवतारां पीर पैगम्बरां दी बहुती नहीं भीड़, बहुतयां विच्चों थोड़े आपणे कोल बहाइंदा।

संदेशा देवे अन्त कल, कलकाती वेख वखाईआ। जिस दा वसेरा जल थल, महीअल रिहा समाईआ। जिस दा महल्ल उच्च अट्टल, सच दवार मिले वडयाईआ। सो धुर संदेसा रिहा घल, शब्दी करे पढ़ाईआ। कलिजुग भाणा ना जाए टल, ना कोई मेट मिटाईआ। हरि का रउ कोई ना सके ठग्गल, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अछल अछल्ल, वल छलधारी आपणी कार कमाईआ।

देवे संदेशा वेखो कल आया कलकी, निरगुण निरवैर वड्डी वडयाईआ। जिस दी तत्तां वाली बाहरों बरदी, अंदर निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिउँ भावे तिउँ करे आपणी मर्ज़ी,

खुदमुखत्यार आपणा हुक्म वरताईआ। आदि जुगादी बण के सच्चा फ़रजी, फ़र्ज़ आपणा दए निभाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दी सुणदा रिहा अर्ज़ी, जो जुग चौकड़ी गए सुणाईआ। कलिजुग अन्तम वेखे हनेर गर्दी, गदागर होई लोकाईआ। साधां सुरती साचे मन्दर मूल ना चढ़दी, डूंघी भवर ना कोई लंघाईआ। जगत विकारे कोलों डरदी, अंदर बैठी मुख छुपाईआ। बेशक अमृत वेले उठ के अक्खरां वाली बाणी पढ़दी, कलमयां रही गाईआ। बिन पुरख अकाल बणया कोई ना दर्दी, दिलबर मिल्या ना सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ। (२१ मध्घर २०२१ बि)

गोबिन्द किहा पुरख अकाल मैं तेरा सूरबीर, बीरता विच्च अखवाईआ। एह गुरमुख मेरी तस्वीर, तेरे रूप विच्च समाईआ। एह मेरा मिलख जागीर, जिन्नां दे अंदर वड़ के डेरा लाईआ। मेरी मंज़ल इन्नां नाल अखीर, चोटी चढ़ के खुशी वखाईआ। इन्नां मेरा अमृत पीता सच्चा सीर, सीरख़ार बच्चे नज़रीं आईआ। जे तूं पुरख अकाल पातशाह मैं तेरा वज़ीर, दोहां बिना रईअत कम्म किसे ना आईआ। जे तूं मालक ते मैं तेरी तकदीर, बिन तकदीर तदबीर चले ना कोई चतुराईआ। जे तूं आका ते मैं तेरा फ़कीर, बिन दरवेश तेरे दर ते अलख ना कोई जगाईआ। जे तूं बेनज़ीर, मैं तेरी नज़र लोकमात गुरमुखां उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा संगी बणके संग निभाईआ। (१ पोह २०२१ बि)

धरनी कहे जिस वेले एहदा मिन्ट इकीवां आया अख़ीर, बिन घड़ीउँ घड़िआल दित्ता वजाईआ। पंजां उंगलां नाल कढ के इक्क लकीर, पंजा सभ दे उप्पर लाईआ। भगतो तुसीं मेरे मैं तुहाढ्ढी तस्वीर, तस्वीर दे अंदर बेनज़ीर सोभा पाईआ। तुसीं प्रेम प्यार दे भाई भैण वीर, इक्को रूप दित्ते वखाईआ। नाम दी डोरी तुहाढ्ढी सच्ची ज़ंजीर, सके ना कोई तुड़ाईआ। तुसीं मेरे पातशाह ते मैं तुहाढ्ढा वज़ीर, जिस वेले चाहो सेवा आपणी लउ लगाईआ। तुसीं मेरे आका मैं तुहाढ्ढा फ़कीर, तुहाढ्ढे ढोले सदा गाईआ। तुसीं मेरा मक़द्दर मैं तुहाढ्ढी तक़दीर, तदबीर आपणी दिउ जणाईआ। तुसीं मालक ते मैं तुहाढ्ढी शमशीर, जिध्धर चाहो खण्डा लउ भवाईआ। तुसां प्रेम नाल मैनूं देणी अशीर, तासीर तुहाढ्ढी मेरा रूप नज़री आईआ। एह जम्मू नहीं कशमीर, अकसीर तुहाढ्ढी रिहा बदलाईआ। इक्को रंग रंगा के शाह हकीर, हुक्म आपणे विच्च चलाईआ। तुहाढ्ढे प्रेम अंदर रैण सुबाई दिलगीर, दिलगीरी तुहाढ्ढी दिती गवाईआ। भावें सेवक समझो भावें समझो पीर, पीरां दा पीर हो के फेर वी तुहाढ्ढा अखवाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहाढ्ढे बदल देवे अंदरों ज़मीर, ज़ामन हो के अगला रस्ता दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, मेहर नज़र नाल तराईआ। (६ चेत श सं १)

पंदरां जेठ कहे मैं वेख्या खेल बेनज़ीर, जगत नज़र किसे ना आईआ। पुरख अबिनाशी मेरा उह पीर, पैगम्बरां दा पैगम्बर जलवा नूर करे शहनशाहीआ। जिस नूं कट ना सके कोई शमशीर, चिल्ला तीर कमान निशान ना कोई बणाईआ। जिस दे हत्थ आदि जुगादि जुग चौकड़ी दो जहानां तदबीर, तजवीज़ आपणे विच्च छुपाईआ। जिस दी जगत नेत्रां नाल

कोई तक ना सक्कया तस्वीर, रूप रंग रेख ना सक्कया कोई समझाईआ। जिस ने लेखा मुकौणा अमीर ग़रीब, शाह हकीर इक्को रंग रंगाईआ। सो पुरख अकाल दीन दयाल आपणा खेल करन आया अजीब, जिस दी तरतीब सक्कया ना कोई जणाईआ। जन भगतां मेहर नज़र नाल बदल देवे नसीब, निसबत आपणे हत्थ वखाईआ। एथे ओथे होए ना कोई तकलीफ़, दुख दर्द दर्दी हो के रिहा वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहारा सच प्रीत, परम पुरख परमात्म आत्म आपणा जोड़ जुड़ाईआ। (१५ जेठ श सं १)

मध्घर कहे मैं दस्सां अख़ीर, बिन अक्खरां अक्खर समझाईआ। जिसदी नज़र ना आए कोई तस्वीर, नूरो नूर करे रुशनाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी बेनज़ीर, नज़र अंदरों दए बदलाईआ। तुहाढ्ढा लहणा देणा वेख कबीर, जुलाहा खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर्म दा लेखा रिहा चुकाईआ। (७ मध्घर श सं १)

मेहर नज़र कहे की दसां बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ । आदि जुगादी दाता दानी गुणी गहीर, गहर गवर वड वडयाईआ। जिस दी अकस विच्च नहीं तस्वीर, रूप रंग ना कोई प्रगटाईआ। दो जहानां मालक ख़ालक वड्डा पीर, पारब्रह्म इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क समझाईआ। (४ मध्घर श सं १)

जन भगतां बख्शे आपणी सच तस्वीर, इष्ट इक्को इक्क जणाईआ । भेव खुलाए बेनज़ीर, नज़र विच्चों नज़र दए बदलाईआ। नाम खण्डा दे शमशीर, शरअ कूड़ी बंधन दए मुकाईआ। हुक्मे अंदर हुक्म मना कबीर, किबल आपणा दित्ता समझाईआ। जन भगतां बख्श के नाम जागीर, दौलतमंद धुर दे दित्ता बणाईआ। जिथ्थे पुज्जे ना कोई ग़रीब अमीर, शाह सुल्तान नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा एकँकारा इक्को इक्क सुहाईआ। (७ कतक श सं २)

सतिगुर शब्द कहे खेल तक्कणा बेनज़ीर, जगत नज़रीआ नज़र किसे ना आईआ। शब्द दी धार मार के आए लकीर, लाईन आपणी आप बणाईआ। दर्शन देवे निरगुण धार नौ सौ नड़िनवे फकीर, खुआब खुआबां रंग रंगाईआ। तत्त दी धार जणा तस्वीर, तसवर आपणा आप कराईआ। जिन्नां साढ्ढे तिन्न साल रहणा दिलगीर, दिवस रैण अन्तर निरंतर भज्जण वाहो दाहीआ। शब्दी धार दसाउणा काली अलफी वाला पीर, कफ्नी कफ्नां दा डेरा ढाहीआ । जिस शरअ दा तोड़ना ज़ंजीर, शरीअत दा लेखा दए मुकाईआ। जगत जहान नवीं करनी तामीर, मानव इक्को गंढ पवाईआ। चौदां तबकां तों बाहर जिस दी जागीर, चौदां लोक सीस निवाईआ। जिस दा लेखा लहणा देणा होणा विच्च कशमीर, कछ मत दी आशा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। (१५ चेत श सं ८)

कलिजुग कहे भगतो मेरे नाल अन्त कर लउ प्यार, फेर पता नहीं मिलणा केहड़ी थाईंआ।

दर्शन सिँघ तूं वी बड़ा यार, यराना पिछला रिहा जणाईआ। कपूर सिँघ तेरी मुहब्बत नाड़ नाड़, नाड़ी नाड़ी दए गवाहीआ। नाज़र सिँघ मैनूं वखा दे आपणा यार, यराना जिस दा इक्को नज़री आईआ। अमरजीत सिँघ मैनूं तेरे उत्ते इतबार, प्रभ तों भुल्ल देणी बख्शाईआ। तृप्त कौर तूं आपणा गुस्सा मैनूं दे दे उधार, मैं उधारा लै के समुंद सागर विच्च सुटाईआ। जुगिंदर कौर तेरा सदी चौधवीं नाल प्यार, तारे चन्द वालीए मैनूं थपकी दे लगाईआ। दविंदर कौर तेरा पिता पुरख अकाल, अकल कलधारी नज़री आईआ। मेरा तुहाढ्ढे अग्गे सवाल, खाली झोली रिहा विखाईआ। आपणे बंधन विच्चों मैनूं दिउ निकाल, मैं जावां चाईं चाईंआ। सच पुच्छो मैं हुणे मारां छाल, छलांग दिआं लगाईआ। तुहाढ्ढी काया मन्दर बण जाए धर्मसाल, धर्म दवारा सोभा पाईआ । तुहाढ्ढा जीवण होए खुशहाल, खुशीआं रंग रंगाईआ। पर मेरे साहिब दे हुक्म दी वड्डी झाल, जिस अवतार पैगम्बर गुरू दीनां मज़हबां विच्च झल्ले दित्ता बणाईआ। समुंद सागराँ तों बाहर उस दा उछाल, जिस दा कन्ढ्ढा घाट नज़र कोई ना आईआ। तुसीं मेरी करनी दे दलाल, करता तुहानूं दए वडयाईआ। पर इक्क गल्ल याद रक्खयो, तुसां आपणे आप नूं रक्खणा संभाल, सम्बल बैठा आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आपणे हत्थ रखाईआ।

कलिजुग कहे मैं जांदा जांदा दस्सां अख़ीर, निव निव लागाँ पाईंआ । मेरा मालक दस्तगीर, प्रवरदिगार इक्क अखवाईआ। जिस दा नूर बेनज़ीर, जग नेत्र वेखण कोई ना पाईआ। उह बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणी इक्क दृढ़ाईआ। तुहानूं खुशीआं नाल मिले कबीर, काअबिआं तों पऱे अक्ख मिलाईआ। पर सवेरे रोज़ कढ्ढे हो के इक्क वार आपणे सतिगुरू दी ज़रूर तक्कया करो तस्वीर, जिस विच्च लातस्वीर बैठा सोभा पाईआ। तुहाढ्ढा प्रविशट रहे सरीर, चिन्ता रोग दा डेरा ढाहीआ। मैं वी उसे दा आज़ीज़, बरखुरदार इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति दी सति दए तमीज़, असति दा लेखा दए मुकाईआ। (१ भादरों श सं ८)

सतिगुर शब्द कहे हरि दाता गहर गम्भीर, गवर नज़र किसे ना आईआ। जिस दी खिच्च सके ना कोई तस्वीर, तसवर कर ना कोई समझाईआ। उह निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जन भगतां देवे धीर, धीरज नाम निधान झोली पाईआ। हउमे हंगता कूड़ कुड़िआरी कढ्ढ के पीड़, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। अमृत रस निझर झिरने दे के सीर, सांतक सति सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि वड्डा वड वडयाईआ । (२५ मध्घर शहनशाही सम्मत ६)

सतिगुर सागर गहर गम्भीर, निरगुण धार निरवैर इक्क अखवाईआ। जो वेखणहारा काया माटी तन सरीर, तत्तव तत्त खोज खुजाईआ। जो अन्तर निरंतर पर्दा देवे चीर, उहला रहण कोई ना पाईआ। मेहरवान हो के बदल देवे तकदीर, तदबीर नाम वाली समझाईआ। जन्म कर्म दी मेट देवे लकीर, दूई दवैत दा पन्ध मुकाईआ। अमृत आत्म बख्श के ठांडा

सीर, सांतक सति दए दरसाईआ। भेव चुका के शाह हकीर, एका रंग दए वखाईआ। बिन जगत अक्खां तों काया मन्दर अंदर वखाए आपणी तस्वीर, नूर नुराना नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा भेव आप खुल्ह़ाईआ। (१२ चेत श सं १०)

सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दी खिच्च ना सके कोई तस्वीर। (२६ मध्घर श सं ११)

सच तस्वीर रविदास चमरेटा, एका इष्ट रखाइंदा। वेखणहारा गंगा तट्ट थेटा, हत्थ केसर इक्क जणाइंदा। लेखा जाणे मां पिओ बेटा, पिता पूत खेल खलाइंदा। ठग्गाँ चोरां देवे नेंता, घर आयां माण रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। (१० जेठ २०१८ बि)

नूरी जलवा सच तस्वीर, तसबी माला ना कोई लटकाईआ। (१८ कत्तक २०१६ बि)

सतिगुर शब्द गा गा थक्के पीर फ़कीर, पैगम्बर ढोला इक्को गाईआ । सतिगुर शब्द जुग जुग घत्ते वहीर, लोकमात वेस वटाईआ। सतिगुर शब्द बेनज़ीर, नज़र किसे ना आईआ। सतिगुर शब्द सच सतिगुर तस्वीर, नूर नूराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम इक्को इक्क समझाईआ। (२६ माघ २०१६ बि)

सतिगुर दाता गहर गम्भीर, सो पुरख निरञ्जण आप अखवाइंदा। हरि पुरख निरञ्जण वड पीरन पीर, बेनज़ीर वेस वटाइंदा। एकँकारा शाह हकीर, शाह पातशाह वेख वखाइंदा। आदि निरञ्जण सच तस्वीर, रूप रंग रेख ना कोई वखाइंदा। अबिनाशी करता घत वहीर, नित नवित्त आपणी कार कमाइंदा। श्री भगवान देवणहारा ठांडा सीर, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। पारब्रह्म प्रभ बंन्नणहारा बीड़, बंन्न बेड़ा आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा इक्क अखवाइंदा। (१६ जेठ २०२० बि)

पंज तत्त जगत जुग नाता, नर नरायण बणत बणाइंदा। जुग चौकड़ी खेल तमाशा, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। भगत भगवान देवे दाता, नाम भंडारा इक्क वरताइंदा। नाम सुणाए साची गाथा, भेव अभेद समझाइंदा। शब्द चढ़ाए साचे राथा, रथ रथवाही इक्क अखवाइंदा। होए सहाई बण पिता माता, बालक आपणी गोद उठाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ जोती जाता, जागरत जोत इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा।

पंज तत्त जगत सरीर, तन माटी ख़ाक समाईआ। बख्शश करे बेनज़ीर, श्री भगवान वड्डी वडयाईआ । सूरत सच सच तस्वीर, निरगुण सरगुण दए वखाईआ। चोटी चढ़ आप अख़ीर, घर साचे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

पंज तत्त हड्ड नाड़ी मास, रकत बूंद खेल खलाइंदा। निरगुण नूर कर प्रकाश, जोती जोत

डगमगाइंदा। पवण स्वामी दे स्वास, सगला संग निभाइंदा। मण्डल मंडप पा पा रास, गोपी काहन नचाइंदा। वेखणहार अनाथां नाथ, दीनन आपणी दया कमाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप वखाइंदा।
साचा रंग पंज तत्त, तन माटी रूप वखाईआ। करे खेल पुरख समरथ, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। आत्म देवे अमोलक वथ, परमात्म वंड वंडाईआ। नाम निधाना साची गाथ, अक्खर आपणा आप समझाईआ। अन्तर अन्तर आपे वस, दर मेला सहज सुभाईआ। निझर देवे अमृत रस, रसना रस चक्ख ना सके राईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आपणे हत्थ रखाईआ। (२ हाढ़ २०२० बि)

बेपरवाह बण फ़कीर, फ़िकरा आपणे नाम सुणाइंदा। मुरीद होए ना कोई दिलगीर, मुशर्द आपणा रंग रंगाइंदा। सारे कट दिउ शरअ ज़ंजीर, शरीअत विच्च कदे ना आइंदा। जिस बणाई तुहाड्ढी तकदीर, सो आपणी तस्वीर साफ़ वखाइंदा। कलमा पढ़ो इक्को पीर, आइत इक्को इक्क जणाइंदा । साची सिखो इक्क तकबीर, तकवा इक्को इक्क रखाइंदा। दर आया बेनज़ीर, नज़र आपणी आप मिलाइंदा। लेखे लाए शाह हकीर, ऊँच नीच ना वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। (१७ हाढ़ २०२० बि)

शास्त्र सिमरत वेद पुरान अञ्जील कुरान गीता ज्ञान दस्स सकी ना सच तेरी तस्वीर, तसबी माला मणका मणका मन का मणका ना कोई भवाईआ। (२५ पोह २०२० बि)

हरि करता सतिगुर गहर गम्भीर, गुणवन्त भेव ना आइंदा। कलिजुग अन्तम प्रगट ज़ाहरा पीर, दस्तगीर आपणी कार कमाइंदा। कलिजुग कूड़ी माया करे लीर, सतिजुग चन्न चमकाइंदा। शरअ शरीअत कट ज़ंजीर, लाशरीक खोल् वखाइंदा। सति धर्म दी इक्क तदबीर, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। जोती नूर सच तस्वीर, बिन रूप रेख रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। (२१ अस्सू २०२० बि)
श्री भगवान गहर गम्भीर, सो करता आप जणाइंदा। जन भगतो चोटी वेखो चढ़ अख़ीर, आख़र आपणा मेल मिलाइंदा। जिथ्थे निरगुण नूर सच तस्वीर, मुसवर नज़र कोई ना आइंदा। ना कोई शरअ दिसे ज़ंजीर, ज़ालम रूप ना कोई वटाइंदा। जिस दर ते झुके पैगम्बर पीर, गुर अवतार सीस निवाइंदा। जिथ्थे लेखा अक्खरां विच्च ना होए मार लकीर, पत्थरां उत्ते भेव ना कोई जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाइंदा। (२३ चेत २०२१ बि)
वेख अदल गुरू गुर पीर, दरगाह साची ध्यान लगाईआ। वेखो सज्जणो अन्त होया अख़ीर, आख़र सभ नूं रिहा समझाईआ। परवरदिगार ला तस्वीर, तसवर आपणा आप कर के मुरीद मुशर्दां रिहा समझाईआ । कूड़ा कट शरअ ज़ंजीर, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। सदी चौधवीं बदल तकदीर, तदबीर अगली दए वखाईआ। जिस नूं सजदा कर के मुहम्मद नक्क

नाल कढ़ु के गिआ लकीर, नेत्र नैणां हन्झआं हार बणाईआ। जिस दे पिच्छे दर दरवेश बरदा बण फ़कीर, मूसा ईसा तन अलफ़ी चोली जगत हंढाईआ। जिस दी अल्ला राणी किसे नज़र ना आई तासीर, तसबी माला मणका गल गानी सर्ब लटकाईआ। सो दाता गहर गम्भीर, गुणवन्ता बेअन्ता धुर दा कन्ता इक्को खेल करे निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे हरि शहनशाह शहनशाहीआ। (२ वसाख २०२१ बि)

सच जैकारा गहर गम्भीर, इक्को इक्क सुणाया। हरिजन लाउँदा रहे बिन सरीर, पंज तत्त नाता तोड़ तुड़ाया। जिस मन्दर चढ़ कूके कबीर, गहर गम्भीर अलाया। सो साहिब बेनज़ीर, निरवैर वेस वटाया। जिस दी अजल सच तस्वीर, दस्तगीर नूर खुदाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडिआया। (१६ जेठ २०२१ बि)

तख़त : सचे सतिगुर तख़त रचाया। सतिगुर मनी सिँघ उप्पर बठाया। महाराज शेर सिँघ आप करे कराया। जेहा देखो तेहा समाया। (१५ मध्घर २००६ बि)

वेखे सुणे परखे वेखे परखे। बिन नाड़ी एह पिंजर खड़के। आपणा संसा सारे लाहो। पूरन सिँघ दी नबज़ नूं हत्थ है लाओ। ऐसी एह चली चाल। नबज़ ना चले आपणी चाल। भेत ना आपणा गुरू रखवाया। प्रगट हो के दर्शन दिखाया। सच्चा तख़त गुर सच्चे बणाया। सिँघासण प्रभ नाम रखवाया। सिँघासण उप्पर प्रभ बैठा आए। कलिजुग ताईं दए उलटाए। (१८ मध्घर २००६ बि)

ब्रह्मा बांहों पकड़ उठाया। पाल सिँघ सच तख़त बहाया। (२५ चेत २००८ बि)

सच तख़त रक्खे प्रभ चरन। चरन डिग्गे आए चार वरन। महिंमा प्रभ की कोई सके ना वरन। कर दरस सर्ब दुःख हरन। गुरमुख होवे फेर जग ना मरन। चरन लाग पतित पापी तरन। कलिजुग प्रगटया प्रभ धरनी धरन। लाज रखवाए जो जन तकाए शरन। बेमुख कलिजुग दुःख डाहढा भरन। महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द तेरा साचा वरन।

सच तख़त रचाया, चले चार जुग। सोहँ शब्द वरताया, चलाई जगत प्रभ धुज। बेमुखां नज़र ना आया, आत्म जोत गई कल बुझ। गुरसिखां प्रभ दरस दिखाया, आत्म भेत खुलाया गुझ । सोहँ शब्द मन वसाया, आत्म तृखा गई बुझ। घर बैठ प्रभ परमेश्वर पाया, गुरचरन प्रीती जाओ लुझ। बाहों पकड़ उठाया, गुरसिखां शब्द लगाई हुज। गुरमुखां प्रभ जोत जगाया, आत्म दीप ना जाए बुझ। महाराज शेर सिँघ परमगत पाईए, दूजी वस्त जीव ना लोड़े कुझ। (१ वसाख २००८ बि)

जन भगतो एदूं वड्डा नहीं कोई तख़त, तख़त निवासी इक्को नज़री आईआ। इस तों परे नहीं कोई अर्श, अर्शां नूं चरनां हेठ दबाईआ। इस तों वड्डा नहीं कोई जोधा मरद, सूरबीर अखवाईआ । इस तों बिना वंडे ना कोई दर्द, दुखीआं दा माही बेपरवाहीआ । गुर अवतार सुण के अर्ज, पैगम्बरां पिच्छेफेरा पाईआ। सभ दा लाह के जाए क़रज़, हिसाब अगला

दए खुल्ह़ाईआ। तुहानूं देणा पवे ना किसे दा धड़त, साफ़ बरी दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची वडयाईआ। (२७ पोह २०२१ बि)

तप : साचा शब्द प्रभ सच चलावे। सन्त जनां सच मार्ग पावे। रसना रस अमृत रस मुख चुआवे। रसना जप जप जप जीव सर्ब सुख पावे। तप तप तप कल वड्डा तप, प्रभ साचा रसना गावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखावे। (१ माघ २००८ बि)

साचे सन्त साचा तप प्रभ नाउँ ध्याया। (५ वसाख २००६ बि)

प्रभ उतारे तीनो तप। कोट उतारे प्रभ साचा पप। सोहँ देवे प्रभ साचा जप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए दरस दिखाए आपणा अप। (१ सावण २००६ बि)

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना जप उतारे तप मिटे पप आत्म रहे सति सरूर। (१७ चेत २०१० बि)

तबीब : बिन दवाईउँ करे इलाज, गुर सतिगुर हत्थ वडयाईआ। दुखीआं दर्दीआं पूरा करे काज, कर किरपा दया कमाईआ। जिस तन पंज तत्त लिआ साज, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश रजो तमो सतो बंधन पाईआ। जो अंदर वड़ चलाए जहाज़, बण बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रोग सोग चिन्ता दुःख आपणे हत्थ रखाईआ।

चिन्ता दुख रोग पूरब कर्म, कर्म कर्मा नाल बंधाइंदा। लेखा जाणे मानस जन्म, जन्म जन्म फोल फुलाइंदा। जिस जन बख्शे आपणी सरन, सिर आपणा हत्थ रखाइंदा। तिस नाता तोड़े जन्म मरन, मरन जन्म पन्ध मुकाइंदा। किरपा करे करनी करन, करता पुरख वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। साची दवा हरि का नाउँ, हरि हरि आप प्याईआ। सदा सुहेला सिर रक्खे ठंडी छाउँ, तत्ती वा ना लागे राईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, कागों हँस उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त काया वेख वखाईआ।

पंज तत्त काया वेखे अगनी अग्ग, हड्ड मास नाड़ी तन जलाया। दिवस रैण जीवत जीअ दुखीआ जग, जीवण मुकत ना कोई कराया। नाड़ी नाड़ी गए बझ, बहत्तर तन्दी तन्द रखाया। तिन्न सौ सठ हाडी विच्चों कोई ना सके कढ्ढ, धनंतर बैठा मुख छुपाया। जिस जन किरपा करे पुरख समरथ, दुःख दर्द रहे ना राया। साचा मार्ग देवे दस्स, एका अक्खर जाप पढ़ाया। सो पुरख निरञ्जण होए वस, हँ मेला सहज सुभाया। जगत दलिद्दर जाए नस्स, सुख सहजे सहज घर आया। हिरदे अंदर सतिगुर पूरा जाए वस, दिवस रैण रैण दिवस बिन नेत्र नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुःख दारू इक्क समझाया।

दुख दारू वेखे दर्द, वेखणहारा आप हो आईआ। कदे तत्ती काया कदे सरद, भेव कोई

ना पाईआ। नेत्र नैण होण ज़रद, दुःख दुःख विच्च छुपाईआ। ना रोग नारी ना कोई मरद, मर्द नारी दिस किसे ना आईआ। पारब्रह्म सतिगुर पूरा शब्द सरूपी इक्को फेरे करद, नाड़ी नाड़ी साफ कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन दवा दया कमाईआ।

बिन दवा आया तबीब, वेखे वेखणहारा। वेखणहारा हो करीब, नेत्र नैण नैण उघाड़ा। पिछला अगला अगला पिछला बख्शे आप नसीब, निसबत निसबत आपणे हत्थ रखे करतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन अमृत आत्म देवे ठंडा ठारा। (१४ फग्गण २०१८ बि)

जुग जुग जन भगतां कटे रोग बीमारी, मरीज़ तबीब वेखे चाईं चाईंआ। नाम पुड़ी देवे कर प्यारी, सच खुमारी दए चढ़ाईआ । (१६ मघ्घर २०१६ बि)

नेरन नेरा हो क़रीब, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। तेरा मार्ग वेखां अजीब, अजीब तरा दे समझाईआ। मैं जन्म कर्म दा तेरा मरीज़, बण तबीब लै बचाईआ। तेरी छोह चरन बदले मेरे नसीब, निसबत आपणी विच्च मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। (२३ हाढ़ २०२१ बि)

तकलीफ़ मिटौण दा जे छेती चाअ, सति सच सच दिआं दृढ़ाईआ । इक्को मन्न सच रज़ा, हुक्म हक सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला लैणा गा, अन्तर आत्म वज्जे नाम वधाईआ। नाता जुड़े बेपरवाह, बेपरवाही विच्च रखाईआ। बिना दवा दारू तों होवे शफ़ा, मरीज़ मरज़ देवे गवाईआ। जो कोई तबीब बिना पुच्छयां दस्सयां घर जावे आ, उस दा नुसखा लउ अज़माईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द लैणा खा, हिरदे अंदर ध्यान लगाईआ। रोगाँ दा रोग सोगाँ दा सोग सहज सुभा देवे गवा, क़ीमत टकयां पैसयां वाली ना कोई रखाईआ। जिस उत्ते किरपा हो जाए उहनूं पए ना फेर एह वबा, जिस नाल खून चले वाहो दाहीआ। हुण अगे बहुती भुगतणी नहीं पैंदी सज़ा, दुख सुख विच्च बदलाईआ। अंदरों बदल देवे आबो हवा, पवण पवण स्वासां नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जगत बीमारी कूड़ी बाहर कढ़ाईआ। (५ वसाख श सं १)

सतिगुर शब्द कहे मैं गुरमुख बणौणा शब्दी मुरीद, मुरदा गोर ना कोई दबाईआ। डाक्टर बण के धुर दा तबीब, अंदरों तबीअत देणी बदलाईआ। सज्जण मीत मुरार बण हबीब, तमीज़ इक्को देणी दृढ़ाईआ। मेहर नज़र नाल कर अज़ीज़, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। सति वस्त तों रहण नहीं देणा कोई ग़रीब, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जुग चौकड़ी जो थोड़ी थोड़ी देंदा रिहा तरतीब, हिसयां विच्च वंड वंडाईआ। खाणी बाणी शरअ शरीअत वेद पुरानां सुणौंदा रिहा गीत, ढोला धुरदरगाहीआ। सो सतिगुर साहिब खेल करे अजीब, अजब निराला वेस वटाईआ। जिस दी मन्नणी ना पए कोई ईद, बकरीद रूप ना कोई वटाईआ। सिद्धी अंदरों कर दए दीद, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। (३२ हाढ़ श सं १) (इलाज करन वाला)

तुरीआ : सुन्न मण्डल हरि खेल नयारा। शब्दी जोती दोए धारा। शब्द थल्ले वैहन्दी धार डूंघी गारा। जोती उप्पर कर उजिआर ओअंकार तुरीआ देस करे वेस, आपे आपणा कर पसारा। आपे आपणे विच्च परवेश। आपे जाणे साचा देस। गुणवन्त गुणवन्त गुणवन्त सहज सुख धारा, साचे घर नर नरेश। अठ्ठे पहर रहे हमेश। ना कोई दीसे दर दरवेश। मुच्छ दाड़ी ना कोई दिसे केस। ना कोई काया तन मन, ना कोई दिसे ब्रह्मा विष्न महेश गणेश। ना कोई छपरी ना कोई छन्न, ना कोई नेत्र ना कोई अंन्, ना कोई मुख ना कोई कन्न, ना कोई करे किसे आदेस । ना कोई सूरज ना कोई चन्न, ना कोई मण्डल तारा करे धन्न धन्न, ना कोई बेड़ा रिहा बंन्, ना कोई दिसे नर नरेश। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे सच घर, खुल्ला रक्खे सच दर, वड वड वड केशव केश। (११ जेठ २०१२ बि)

तुरीआ महल्ल हरि अपार, कवण धाम सुहाइंदा। कवण सरूप रक्ख चार दिवार, छप्पर छन्न कवण रखाइंदा। कवण तख़त ताज सच्ची सरकार, कवण राज कमाइंदा। कवण मारे शब्द आवाज़, कवण दर दरबान सुहाइंदा। कवण रचया हरि हरि काज, कवण खेल खिलाइंदा। कवण घोड़ा दिसे ताज, कवण चरन उठाइंदा। कवण साजण रिहा साज, कवण मीत मुरार अखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, इक्क वखाए सच घर, तुरीआ तेरा रूप समाइंदा। तुरीआ रंग शब्द अटारी, नाम सच मुनारा। आपे जाणे किरपा धारी, गुरमुख विरले देवे चरन प्यारा। जिस जन वेख्या नैण मुंधारी, दिसे एकँकारा। कथना कथी ना रसन उच्चारी, ना लिखे लेख लिखारा। जोती शब्दी एका धारी, तत्त मत ना पावे सारा। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन मेला इक्क घर, तुरीआ गावण हरि हरि पावण ना फिर छुपावण, गुर संगत बैठ अद्ध विचकारा।
उठ सन्त आ दवार। खोल्ल भेव दसम दवार। तुरीआ पाउणी फेर सार। सुरत सवाणी गई हार। गुर शब्द ना मिल्या साचा यार। गुर गोबिन्द दिवस रैण ना लाहे माया ममता तन बुखार। साध सन्त गुरसिख ना करे निंदा, पारब्रह्म रूप अगम्म अपार। गुर गोबिन्दा उतारे मन तन चिन्दा, जिस जन देवे दरस अपार। आप बणाए आपणी बिन्दा, अमृत आत्म धार पावे सागर सिंधा, काया सीतल करे ठंडी ठार। बजर कपाटी तोड़े जिंदा, भगत जनां हरि सद बख़शिंदा, आदि अन्त तारनहार। दाता जोधा सूर शब्द मरगिंदा, पंचम वखाए एका कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन वेखे इक्क घर, तुरीआ तूरत नाद कवण अपार। (१ पोह २०१३ बि)

तुरीआ नाद हरि वज्जणा, नाद अनादा एक। दर दवारे आपे बह बह सजणा, सद आपे होया बिबेक। आप आपणी रक्खे लजना, आपे जाणे आपणी टेक। ना घड़या ना भज्जणा, ना ठंढा ना लग्गे सेक। ताल नगारा ना कोई वज्जणा, ना कोई नेत्र रिहा देख। पड़दा पा किसे ना कज्जणा, ना कोई दिसे रेख मेख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दवारे आपे सजणा।
तुरीआ तख़त सुल्तान है, हरि जोती नूर नुरानी। एका बैठा मेहरवान है, आपे जाणे नाम निशानी। जिस जन देवे जीआ दान है, गुर चरन सच्ची कुरबानी। आवण जावण इक्क

ध्यान है, हरि जोती खेल महानी। हरि जोती खेल महान है, आप आपणे विच्च समानी। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेख सच घर, तुरीआ तेरी इक्क निशानी।
तुरीआ तूर तुरंग, हरि रंग अनरंग हरि हरि रंगिआ। खेले खेल सूरा सर्बंग, आपे होए अंग संग, आप वजाए इक्क मरदंगिआ। आदि अन्त ना होए भंग, ना कोई चले चाल बेहंगिआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा घर, गुरमुख गुरमुख मनमुख तेरी काया चोली रंगिआ।
चौथा घर कवण रास, हरि साचे आप रखवाईआ। कवण वस्त होवे सति पास, घर चौथे जा समाईआ। चौथे घर फिरदे दासी दास, सन्तन राह वखाईआ। सन्तन मेला हरि गुणतास, विछड़ कदे ना जाईआ। कवण रंग पृथ्मी आकाश, वेखे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन पुच्छे इक्क घर, चौथा पद कवण ताल वज्जे ना कोई आवाज़ सुणाईआ। (१ पोह २०१३ बि)

गोबिन्द राग शब्द जणा, आत्म धुन उपजाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमा, आपणी बूझ बुझाईआ। अकाल मूरत इक्क वखा, अकल कला समझाईआ। नाद तूरत रिहा सुणा, तुरीआ पद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला मेल मिलाईआ। (१ मघ्घर २०१४ बि)
कलिजुग अन्तम फेरी पा, आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। दो अक्खर वक्खर जाप जपा, जागरत जोत वखाईआ। सुफन सखोपत दए सुहा, तुरीआ पद समाईआ। तुरीआ रूप आप वटा, अनभव प्रकाश कराईआ। अनभव भेव ना सके कोई पा, हरि गोबिन्द वेख वखाईआ। हरि गोबिन्द गोबिन्द गिआ समा, गोबिन्द डेरा लाईआ। राम रामा राम अखवा, राम रामा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, एका नाउँ अगम्म अथाहो बेपरवाहो लेखा रिहा लिखाईआ। (१६ चेत २०१५ बि)

तुरीआ देस हरि वसेरा, रूप रंग ना कोई जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ चाओ घनेरा, वज्जदी रहे वधाईआ। आदि निरञ्जण लाया डेरा, एका नूर करे रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी पाया घेरा, आप आपणा बन्द कराईआ। अगम्म अगम्मड़ा अलक्ख अलक्खणा आपे वसे नेरन नेरा, दूजा संग ना कोई जणाईआ। आपे गुरू आपे गुर चेरा, सतिगुर पुरख आप अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सूरत आप उपाईआ। (२४ चेत २०१६ बि)
तुरीआ नाद सच तराना, हरि साचा आपे गाइंदा। सचखण्ड निवासी हरि भगवाना, आप आपणा हुक्म सुणाइंदा। अबिनाशी करता नौजवाना, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा इक्क सुहाइंदा। (१ चेत २०१७ बि)
तुरीआ राग हरि तराना, लिखण पढ़ण विच्च ना आईआ। तुरीआ राग अगम्मी गाणा, पुरख अबिनाशी आपे गाईआ। तुरीआ राग वसे सच मकाना, थिर घर साचे आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे एका वर, घर मन्दर मेल मिलाईआ। (२७ हाढ़ २०१७ बि)

तुरीआ राग हरि तराना, पुरख अबिनाशी आपे गाइंदा। साचे मन्दर हो प्रधाना, आप आपणा ताल वजाइंदा। सचखण्ड दवार झुलाए इक्क निशाना, नाम निशाना हत्थ उठाइंदा। पुरख पुरखोतम वड मेहरवाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्दर आप सुहाइंदा।

साचा मन्दर तुरीआ राग, त्रेगुण भेव ना राईआ। पारब्रह्म प्रभ गाए आदि जुगादि, सुर ताल ना कोई रखवाया। निशअक्खर वेखो बोध अगाध, रूप रेख ना कोई दरसाया। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्मादि, भेव अभेदा भेव चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्दर आप सुहाया।

तुरीआ राग शब्द तुरंग, त्रेकाल दरसी आप दौड़ाईआ। निरवैर वजाए इक्क मरदंग, मूरत अकाल सेव कमाईआ। पुरख अकाल निभाए साचा संग, करनी करता करता पुरख आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। साचे मन्दर आपे लंघ, श्री भगवान सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द एका नाद, आप वजाए आदि जुगादि, जुग जुग तार सतार आप हलाईआ।

तुरीआ राग सुणाइंदा, हरि सतिगुर सच्चा शहनशाह। गुर गुर आपे मेल मिलाइंदा, सतिगुर पूरा बेपरवाह। भगतन भउ इक्क चुकाइंदा, निरभौ आपणा नाउँ धरा। सन्तन सिख्या इक्क समझाइंदा, साख़यात जोत दए जगा। गुरमुख आपणे लड़ बंधाइंदा, शब्द सरूपी बंधन पा। गुरसिख सोए मात उठाइंदा, लख चुरासी फंदन पर्दा लाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी बणे मलाह। (५ भादरों २०१७ बि)

हरिजन भिखारी मंगदा, एका नाम अनडिठ। सतिगुर पूरा चोली रंगदा, जुग जुग करे साचा हित। तजाए ताल नाम एका मरदंग दा, वेस अव्वलड़ा नित नवित्त। रस माणे सेज पलंघ दा, आत्म सेजा बह बह मित। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, माणस जन्म लेख चुकाए, पूरब कर्मां जित। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अठ्ठे पहर इक्क जुमाल रखवाए, सुफन सखोपत जागरत तुरीआ एका रूप दरसाए, ना कोई वार ना कोई थित। (१६ फग्गण २०१७ बि)

सार कहे मेरी साची धार, तुरीआ राह चलाईआ। सुफ़न सखोपत जागरत सभ तों वसे बाहर, बस्ती आपणी इक्क वसाईआ। औण जाण दा नहीं आम विहार, खुल्ली गली ना कोई वखाईआ। पारब्रह्म बेऐब परवरदिगार, बेपरवाह वेख वखाईआ। आदि जुगादि जिउँ भावे तिउँ चलाए कार, करनी करता आप जणाईआ । जिस वेले मारे सति अवाज़, सति सतिवादी दया कमाईआ। ना कोई लेखा बोध अगाध, अगाध बोध ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुरीआ आपणी धार जणाईआ।

तुरीआ संदेसा देवे तुरत, सार सार जणाइंदा। मेल मिलावा अकाल मूरत, मूरत अवर ना कोई वखाइंदा। इक्क इकल्ला आसा पूरत, असल आपणा आप जणाइंदा। किसे ना लभ्भे साची सूरत, हुसीन आपणा मुख छुपाइंदा। जिउँ भावे तिउँ आपणी पूरी करे ज़रूरत, ज़ाहर आपणा खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका धार जणाइंदा।

तुरीआ कहे मैं तेरा राग, अनरागी तेरी वडयाईआ। आदि जुगादि रही जाग, नेत्र नैण खुल्हाईआ। जुगा जुगन्तर सुणा आवाज़, बिन कन्नां ध्यान लगाईआ। कवण वेले हरि करे याद, सच संदेस सुणाईआ। चरन कँवल डिगाँ भाज, मस्तक टिक्का लाईआ। वेखां खेल हरि का काज, किस बिध रिहा कराईआ। सचखण्ड दा सच समाज, शहनशाह बणाईआ। शहनशाह बण के करे राज, आपणा हुक्म वरताईआ। हुक्मे अंदर सिर ते पहने ताज, तख़त निवासी बेपरवाहीआ। तख़त निवासी रक्खे लाज, आप आपणी दया कमाईआ। दया कमा साजे साज, साजणहारा खुशी मनाईआ। फेर मारे सच आवाज़, सार शब्द लए उठाईआ। सार शब्द गाए राग, तुरीआ राग वजाईआ। तुरीआ होए आप विस्माद, बिस्मिल रूप समाईआ। ना कोई खेल ना तमाश, तमाशबीन ना कोई जणाईआ। पत डाली ना कोई साख, शख्सीअत नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुरीआ आपणी धार जणाईआ।

तुरीआ कहे मैं तेरी तार, तारनहारे तेरी आस रखवाईआ। तुध बिन करे ना कोई प्यार, दुहागण वेखी सृष्ट सबाईआ। उच्ची कूक कूक वाजां रही मार, बिरहों वैरागण दए दुहाईआ। कवण वेला प्रभ नेत्र लए उघाड़, नैण नैण नैण उठाईआ। मेरी पावे सार, मुहब्बत आपणे नाल बंधाईआ। सिर पल्लू देवे डार, कर किरपा बेपरवाहीआ। मैं जावां सच दरबार, घर सच्चे चाईं चाईंआ। ओथे वजावां आपणा ताल, ताल इक्को इक्क रखवाईआ। सच सुणावां आपणा राग, अनरागी राग अलाईआ। उच्ची कूकां मारां आवाज़, आ मिल मेरे सच्चे माहीआ। मेरा अगला पिछला धो दाग़, तेरे नाम मिले वडयाईआ। तूं साहिब कन्त सुहाग, घर तेरे वज्जे वधाईआ। कर किरपा गुरू महाराज, तेरी इक्को ओट तकाईआ। मैं वखावां आपणा नाज़, नाज़क रूप वटाईआ। मेरे साहिब सतिगुर तेरे दर ते करां नाच, मुख घुंगट इक्क उठाईआ। जिस तुरीआ नूं किसे ना पाया हाथ, तुरीआ गा गा गए सुणाईआ। सो तुरीया तिरीआ बण के आई तेरे पास, तृष्ना तृप्त दे बुझाईआ। तूं साहिब अलक्खणा लाख, अलक्ख अगोचर बेपरवाहीआ। अगम्म अथाह बेपरवाह मैं तेरी होई दास, दासी आपणा नाउँ धराईआ। मेरी पिछली पुंनी आस, अग्गे ओट रखवाईआ। पुरख अबिनाशी किहा हस्स, हँस मुख सालाहीआ। आ साचा मार्ग देवां दस्स, दह दिशा वखाईआ। जा के मेरे भगतां कोल वस, जिथ्थे मेरे नाम वडयाईआ। आपणा जा के राग दस्स, बण वैरागण फेरा पाईआ। मूंह दे भार जा के ढठ्ठ, आपणा ताण गवाईआ। जिथ्थे होया सति इक्ठ, साचा सोहला देणा सुणाईआ। मैं धुर दरगाहों आई नट्ठ, सच सुनेहुड़ा इक्क जणाईआ। सच सच्ची देवां दस्स, जो साहिब मेरे सतिगुर भाईआ। पुरख अबिनाशी मेरा चलण ना दित्ता कोई वस, हुक्मे अंदर फिराईआ। इक्को किहा जिस घर होवे मेरा जस, ओथे जाणा चाईं चाईंआ। गुरमुख सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ढोला लौंदे होण हस्स हस्स, सो मेरा ढोला तुरीआ तेरा अन्त वखाईआ।

तुरीआ अग्गों पई रो, नैणां नीर वहाया। हाए, ए की गिआ हो, पुरख अबिनाशी की की खेल रचाया। जुग जुग मेरा राग सुणदा रिहा सो, सो हुण आपणा राग गुरमुखां रिहा सुणाया। मेरे नालों होया निर्मोह, मुहब्बत भगतां नाल वधाया। मैं वेख्या अग्गे हो, जो वेख्या सो आख सुणाया। मेरा ताल सुणे ना को, राग नाद ना कोई जणाया। श्री

भगवान जन भगतां रिहा कह मैं तुहाढ़े जोगा गिआ हो, जुगती इक्को इक्क जणाया। अंदर इक्क बाहरों दिसण दो, दोहां दा इक्को घर मेल मिलाया। जो जन चरन कँवल गिआ छोह, सो शहनशाह आपणे घर मंगाया। तुरीआ राग आपणे हत्थ रही धो, गुरमुखां धूढ़ी साबण लाया । जुग चौकड़ी मैनूं कोई ना सक्कया टोह, मेरा अन्त किसे ना पाया । अन्त श्री भगवान मैथों सभ कुछ लिआ खोह, जन भगतां मुशकल हल्ल कराया। मेरी सेवा लाई गुरसिखां अंदर लै के जा ढोआ ढो, सोहँ ढोला मेरे सिर चुकाया। मैं किहा किरपा निधान, श्री भगवान मैं जावां छब्बी पोह, जिस वेले तेरा तख़त सोभा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार बंधाया।

तुरीया कहे मेरी तरल जवानी, जोबन बेपरवाही दा। चार जुग मेरी दस्सदे रहे निशानी, निशाना तीर ना कोई लगाइंदा। काग़ज़ कलम शाही लिखदे रहे ब्यानी, पर्दा चुक्क ना कोई वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर गौंदे रहे कहाणी, कह कह शुकर मनाइंदा । मैं सार शब्द दी बण के बैठी रही राणी, मैनूं हत्थ ना कोई लाइंदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी युग मेरी रही अलड़ जवानी, अग्गे हो मेरी सेज ना कोई हंडाइंदा। दूर दुराडे सारे होए कुरबानी, कोटन कोट शमा दीपक उत्ते जलाइंदा। कलिजुग अन्तम पुरख अकाल करी खेल महानी, खेलणहारा आप खलाइंदा। निरगुण वेखे मार ध्यानी, नेत्र नैण नैण उठाइंदा। बिन हरि कन्त सभ दी बिरथा जाए जवानी, जोबन कम्म किसे ना आइंदा। तुरीआ तेरी तर्ज़ महानी, तरां तरां समझाइंदा। तेरा भेव ना पाया किसे विद्वानी, विद्या रंग ना कोई चढ़ाइंदा। आ वेख इक्क सच निशानी, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। जिन्नां मिल्या साहिब सतिगुर सच सुल्तानी, सो तेरा राग कोई ना गाइंदा। सार शब्द सार सार बणे दरबानी, दर साची सेव कमाइंदा। उठ सुचज्जी सुघड़ सवाणी, हरि करता भेव खुलायंदा। नेत्र वेख सच्चा हाणी, हरि सच सच जणाइंदा। जिन्नां मिल्या महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिन्नां सुफ़न सखोपत जागरत तुरीआ तुरीआ तेरा पन्ध मुकाइंदा।

तुरीआ कहे मैं सदा वचोली, सन्त भगत मिलाईआ। पीर पैगम्बरां चुक्की डोली, दर तेरा रही वखाईआ। गुर अवतारां घोल घोली, आपणी सेव कमाईआ। बिन रसना जिह्वा मैं सदा बोली, बत्ती दन्द ना कोई रखाईआ। श्री भगवान हुण क्यों करदा एं गुरसिखां दी गोली, क्यों तूं गुरसिखां अंदर वड़ के आपणा राग सुणाईआ । मैनूं तेरी समझ ना आई बोली, तूं की की करें पढ़ाईआ। किस बिध आपणी हट्टी खोल्ही, तक्कड़ी वट्टा ना कोई रखाईआ। मैं वेख होई हैरान, किस तरां पूरन बदली चोली, परमेशर अंदर बैठा डेरा लाईआ। मैं वारी मैं घोली, मैं आपणा माण गवाईआ। मैं आपणी गठड़ी फोली, पूरन वरगा पूरा नज़र कोई ना आईआ । जिध्धर वेखां मेरी पाटी चोली, साधां सन्तां मेरीआं तणीआं दितीआं तुड़ाईआ। मेरी वेख खाली डोली, चार युग चार कहार भज्जे जांदे वाहो दाहीआ। मैं पौण आई रौली, उठो सिखो नट्ठो महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान खेल रचाईआ। जन भगतां घर करन आया बौहणी, मुख आपणे सगन लगाईआ। फिर सभ नूं चाढ़े तौणी, मेरा राग भुलाईआ। करे सो जो साहिब भौणी, अग्गे चले ना कोई चतुराईआ। चौदां विद्या सुरत भुलौणी, छत्ती राग ना कोई वडयाईआ। अग्गे हो छाती किसे ना डौहणी, शहनशाह सभ नूं रिहा ढाहीआ। बण के जट्ट करे रौणी, हल्ल आपणा फेर चलाईआ । आपे जाणे हाढ़ी सौणी, वड किरसाणा

बेपरवाहीआ। जिस ने बीजी ओसे गौहणी, दूजा संग ना कोई रखवाईआ। जिस गाही ओस उडौणी, हवा आपणी आप चलाईआ। जिस उडाई ओन आपणे अंदर पौणी, भुक्खी मरे सर्ब लोकाईआ। फेर वेखे अवणी गवणी, अवण गवण डेरा ढाहीआ। मेरी सुर किसे ना मिले सुणौणी, सुरत सभ दी दए भुआईआ। क्यों पिच्छे लाई सभ दे होणी, हुक्मे हुक्म भुआईआ। गुरमुखां खुशी इक्क वखौणी, पिछली खुशकी देवे लाहीआ। पुशत दर पुशत पुशती आप करौणी, पुछण आया बेपरवाहीआ। प्रेम नाल कुशती प्रेम करौणी, गुरसिख गुरसिख नाल मिलाईआ। दूती दुष्टी सृष्टी सर्ब खपौणी, इष्टी इक्को इक्क बचाईआ। दोज़ख़ बहसती खेल रचौणी, बचया कोई रहण ना पाईआ। फ़रिशतिआं फ़रिसत इक्क वखौणी, आपणे हत्थीं कर लिखाईआ। चार कुण्ट सेवा लौणी, भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। आपणी ईन दीन इक्क मनौणी, मिहबान बीदो वड वडयाईआ। लोक तीन तार हलौणी, सतार आपणी दए जणाईआ। चौदां लोक धार वखौणी, धार आपणे नाम प्रगटाईआ। दो जहान सार पौणी, सार शब्द वज्जे वधाईआ। सचखण्ड कार कमौणी, गुरमुख साचे मेल मिलाईआ। बेहंगम चाल इक्क रखौणी, राह विच्च ना कोई अटकाईआ। भुक्ख नंग सर्ब कटौणी, भुखिआं भुक्ख गवाईआ। तुरीआ तरंग आप चढ़ौणी, तुरत देवे समझाईआ। सूरे सर्बंग खेल करौणी, मरदंग आपणा नाम वजाईआ। सभ दी मंग पूर करौणी, गुर अवतार पीर पैगम्बर जो बैठे ध्यान लगाईआ। सदा चित अनन्द आपणी जोत दर वखौणी, दूजी होर ना कोई वडयाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्गे कोई रहण ना देवे अड़ौणी, अड़िके सभ दे रिहा मिटाईआ। तुरीआ कहे प्रभ तेरी रहमत, मैं वेख होई हैराना। ग़रीबां नाल होइउँ सहिमत, आपणा दित्ता धुर परवाना। सारे आखण गुरसिख अहिमक, जिनाँ मिल्या विष्नूं भगवाना। विष्नूं भगवान कहे मैं तारां जिनाँ तेड़ बध्धी तहिमत, सिर टेडी पग्ग वखाना। ओनाँ नूं अग्गे कोई ना आवे ज़हिमत, दुःख सुख विच्च उलटाणा। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढे अंदर वड़ के मार सैनत, रसना बोल ना कोई सुणाना। जे कोई विदवान वेखे ला के ऐनक, हरि जू शीशे भन्न वखाना। जे कोई लेखा लिखे नाल सवैनक, कलम शाही पन्ध मुकाना। जे कोई कहे साध सन्त मैं वड्डा मकैनक, थीउरी सभ दी फ़ेल कराना। जन भगतां मिल्या हरि जू हरि हरि वड्डा सैनक, सैनापती श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल दो जहानां।

तुरीआ कहे मैं होई हैरान, बेवस दिआं दुहाईआ। तेरी हरि जू खेल महान, अन्त कोई ना आईआ। जिनाँ नूं कोई ना पुच्छे तूं ओनाँ दा बणया आण, की तेरी चतुराईआ। मैं तुरीआ तेरे दर नौजवान, बैठी आपणा रूप वटाईआ। तूं अक्ख पुट के ना वेख्या मार ध्यान, तेरी बेपरवाहीआ। मैं रट रट थक्की तेरा नाम, बिन रसना जिह्वा गाईआ। तूं पिच्छे हट हट आइउँ भगवान, लोकमात फेरा पाईआ। गट गट जो पींदे रहे मधरा पान, तिनाँ मेला रिहा मिलाईआ। पुरख अबिनाशी कहे मैं सदा सदा मेहरवान, जन्म जन्म विच्च बदलाईआ। पिछला लेखा दित्ता आण, क्यों, गोबिन्द छड्डे ना मेरी बाहींआ। तूं बाली नढी अंञाण, तुरीआ तोहे भेव कोई ना आईआ। आ वेख मार ध्यान, किरपा निधान कोटन कोट जन्म दे विछड़े इक्को वार वखाईआ। वेख खेल लग्गी पछताण, पसचाताप कर कर दए दुहाईआ। किरपा कर श्री भगवान, तेरे हत्थ तेरी वडयाईआ। मैं आखिआ गुरसिख बाल अंञाण, मोटी बुद्ध

रखवाईआ । तेरी किरपा मैं वेख्या इक्क निशान, गुरसिख बैठा सचखण्ड डेरा लाईआ। मैनूं उहदी दस्स पहचाण, मैं वेखां चाईं चाईंआ। अगों कहे श्री भगवान, आ तैनूं दिआं वखाईआ। जिस दा नाम सिँघ पाल, तेग़ बहादर वज्जी वधाईआ। औह वेख गोबिन्द मेरे नाल, उंगली लग्गा फिरे वाहो दाहीआ। आ दस्सां खेल होर कमाल, दादा पोतरे नाल लिआईआ। जेहड़े नीहां हेठां दित्ते सवाल, सो मनजीत जगदीश नाउँ धराईआ। जिन्नां खाए कदे ना काल, महांकाल सिर निवाईआ। तुरीआ तेरा सुणया नहीं ओन्नां ताल, सिर इक्को चरन निवाईआ। दो जहानां हल्ल होया सवाल, हलका भार कराईआ । हरि संगत दस्स के आए हाल, बाली बुद्ध मिली वडयाईआ। सोलां मध्घर वज्जा ताल, उनी कत्तक खुशी वखाईआ। होर वेख मेरा लाल, सवरन सवरन रूप वटाईआ। जिस सतिजुग घालण लई घाल, सो बल आपणा लेखा लिआ आपणी थाईंआ। पंज परवान होए बहाल, प्रधान पंजे पंज बणाईआ। पंजे सोहण दर राजान, दरगाह मिली वडयाईआ। पंजां दा इक्को ध्यान, श्री भगवान नज़री आईआ। पिच्छे हरि संगत नूं देण ज्ञान, लोकमात समझाईआ। वीरो भैणो छेती औणा सचखण्ड मकान, सतिगुर मिले चाईं चाईंआ। एथे ना कोई पीण ना कोई खाण, तृसना अग्ग ना कोई रखवाईआ । ना कोई पवण ना मसाण, जल पाणी ना कोई वडयाईआ। ना कोई राग ना कोई गाण, तुरीया चले ना कोई चतुराईआ। जदों मिले मिले भगवान, दूजा नज़र कोई ना आईआ। गुरसिख नच्चण कुद्दण टप्पण गाण, इक्को ढोला गाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तेरी मेरी इक्क पछाण, रूप रंग रेख ना कोई रखवाईआ। अगों हस्स के कहे भगवान, गुरसिख तेरी वड वडयाईआ। तेरे बिनां मेरा सुंञा दिसे मकान, सचखण्ड कम्म किसे ना आईआ। जे भगत ना होवे तां मैं औंतरा जावां विच्च जहान, मेरी पीहड़ी ना कोई चलाईआ । भगत कहे जे तूं ना देवें माण, सानूं धर्म राए दए सजाईआ। सुण के गल्लां तुरीआ होई हैरान, वेखो की करे सच्चा माहीआ। मेरी खाली होई दुकान, सौदा लैण कोई ना आईआ। हट्ट खोल्लया विष्नूं भगवान, मेरी निक्की हट्टी बैठी मुख छुपाईआ। जिस नूं कर किरपा सौदा दित्ता आपणा दान, दयावान दया कमाईआ। तिस नाता तुटा जहान, हरि संगत मेल मिलाईआ। अग्गे सतिगुर की दए ब्यान, लेखा लेख विच्च ना आईआ। जे सच दस्से ते सारे कहण शैतान, शरअ सभ दी रिहा मिटाईआ। (१६ मध्घर २०१६ बि)

भगत सालाहे आप प्रभ, जुग जुग खेल कराइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों लभ्भ, आपणा मेल मिलाइंदा। अमृत चवाए कँवल नभ, उलटा मुख वखाइंदा। करे कराए पार हद्द, हदूद वंड ना कोई वंडाइंदा । गृह आपणे साचे लए सद्द, चरन कँवल आप बहाइंदा। भगत भगवान करे लड, पिता पूत गोद उठाइंदा। अन्त भगवान भगतां कदे ना जाए पिच्छे छड्ड, फड़ बाहों अग्गे लाइंदा। कलिजुग डूंघी सुट्ठे खड्ड, उत्ते आपणा भार पाइंदा। कोटन कोट गए लद्द, गिआ फिर कोई ना आइंदा। श्री भगवान शाह सुल्तान निरगुण दाता पुरख बिधाता जन भगतां विच्च बहे सज, सज्जण इक्को फेरा पाइंदा । एथे ओथे दो जहान रक्खणहारा लज, पत आपणी झोली पाइंदा। सुत्तयां जागदयां दरस कराए रज्ज रज्ज, सुफ़न सखोपत जागरत तुरीआ भगतां दासी आप बणाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समां समें नाल टकराइंदा। उच्चा टिल्ला मन्दर जाणे ढठ्ठ, पत्थर चोटी सर्ब कुरलाइंदा। भगत भगवन्त कहे सच,

सच सच समझाइंदा। लक्ख चुरासी काया माटी कच्च, कूड़ी गगरीआ अन्तम भन्न वखाइंदा। मन वासना रहे नच्च, हरि शब्द ना कोई कमाइंदा। अन्त अगनी जाणा मच्च, पुरख अकाल मवाता नाम लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां इक्को रंग वखाइंदा। (२६ माघ २०१६ बि)

चिठ्ठी कहे मेरा गोबिन्द चुकणा पड़दा, पड़दयां वालिउ दिआं जणाईआ । जिस जगत जहान बचौणा सड़दा, अमृत मेघ बरसाईआ । जिस दे अगे कोई ना अड़दा, भय विच्च सर्ब लोकाईआ । जो पुरख अकाल दा बरदा, सुत दुलारा नज़री आईआ। उहदा नाता पिछला चिर दा, नवीं कहाणी ना कोई सुणाईआ। उह मालक दिलां दे दिल दा, दिलबर बेपरवाहीआ। जिस दे हुक्म अंदर दो जहान कदे ना हिलदा, ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा भुआईआ। उह भगतां सन्तां गुरमुखां गुरसिखां दिने जागदयां रातीं सुत्तयां सुफ़न सखोपत जागरत तुरीआ विच्च मिलदा, तुरत आपणा मेल मिलाईआ। लेखा चुकाए अंबर नील दा, नीले वाला आपणा फेरा पाईआ। ओथे लेखा नहीं किसे दलील दा, मन मति बुद्धि ना कोई चतुराईआ । ओथे झगढ़ा नहीं किसे वकील दा, वुकला देवे ना कोई सफ़ाईआ । ओथे वक्त नहीं किसे अपील दा, धुर फ़रमाणा इक्को वार सुणाईआ । एह लेखा छैल छबील दा, जो धुर दा बांका दिसे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ । (२५ पोह २०२१ बि)

सूरज शीशा दोवें मारन धाह, बौहड़ी बौहड़ी कर के रहे सुणाईआ। सानूं पता नहीं ओस परमात्मा दा केहड़ा नां, किस थां बैठा सोभा पाईआ। हुक्मे अंदर सारे सेवा रहे कमा, भज्जे वाहो दाहीआ। विछोड़ा जोड़ा उहो रिहा बणा, मेल मिलावा आपणे हत्थ रखवाईआ। जो सभ दा रहबर बण के दस्से राह, सबब नाल मेला लए मिला, आत्म परमात्म पर्दा दए उठा, मैं तूं मैं विच्चों लए जगा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सुफ़न अवसथा दए गवा, साफ़ आपणा रंग वखाईआ। जिन्ां भगतां ने मिल के ओस दा ढोला लिआ गा, उह तुरीआ पद गए समा, बाकी नाता गए तुड़ाईआ। जेहड़ी मंज़ल चढ़ के वेखी उस दा करो बिआं, जिथ्थे तूं मैं दा नहीं कोई नां, हैं हम नज़र कोई ना आईआ। खुशीआं नाल देणा गा, समझ नाल देणा समझा, बुधी सर्ब विआपी नूं लैणा उठा, आत्मा परतापी नूं लैणा जगा, जागरत जुगती देणी जणाईआ। (१६ भादरों श सं १)

तिन्न ताप : सभ तों वड्डा मेरा प्रताप। जो ना समझे मेरा मुख वाक । तिन को मारे आप तीन ताप। काल विआपे होए दुःख घने। जो ना हुक्म मेरा मन्ने। (१७ मध्घर २००६ बि)

सोहँ देवे साचा जाप। प्रभ मारे गुरसिख तीनो ताप। जन्म जन्म प्रभ उतारे पाप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई आप। (२२ माघ २००८ बि)

सोहँ साचा रसना जाप। आप उतारे कोटन पाप। विच्चों मारे तीनो ताप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई आपे आप। (१४ भादरों २००६ बि)

१) देह दे रोग अते मन दे विकार।
२) जीवां तों प्राप्त होण वाले दुःख, जिवें सरप, चूहा, मछर आदि तों।
३) प्रकृतिक जिवें हनेरी, गढ़े, अग्ग आदि।

तन्दूर : दर्शन देख होए मन हरया। आत्म चिखा तन तन्दूर ठरया।(२२ चेत २००८ बि) त्रैगुण तपे तदूंर, पंज तत्त अगनी रिहा डाहीआ। (१० चेत श सं ५)

थिर घर : ऊँचा दर ऊँचा दरबारा। थिर घर वसे आप निरँकारा। जोत सरूप जगत उतारा। (२४ चेत २००८ बि)

प्रभ अबिनाशी थिर घर वासी, थिर घर गुरसिख बहाया। (१७ हाढ़ २००८ बि)

घनकपुर सति प्रभ कल दर। जन भगतां दीसे साचा थिर घर। थिर घर कलिजुग जोत प्रगटाए, निहकलंक अवतार नर। जामा धार उपाया, सतिजुग दे के साचा वर। महाराज शेर सिँघ भाणा कल वरताया, खुआर होए सभ नारी नर। (१४ सावण २००८ बि)

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, थिर घर वासी थिर घर निवास रखाए । (१ सावण २००६ बि)
सो सुहाया थान, जिथ्थे प्रभ दरस दिखाया। सो सुहाया थान, जिथ्थे प्रभ जोत जगाया। सो सुहाया थान, जिथ्थे निहकलंक हो आया। सो सुहाया थान, जिथ्थे गुरसिखां माण दवाया। सो सुहाया थान, जिथ्थे थिर घर वासी निज घर आसण लाया। सो सुहाया थान, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ जन भगत तराया। (१३ माघ २००७ बि)

* * * * *
* * * * *
* * * * *
* * * * *
* * * * *